CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगोपालसहस्रनाम

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* श्रीहरि *

अथ गोपालसहस्रनाम

भाषाटीकया समलंकृतम्

आम्नाय-ग्रन्थालय, भरतनिधि, करौंदी, वाराणसी-5

* पार्वत्युवाच *

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शङ्करम्।
ब्रह्मांडाऽखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ॥ १ ॥

अर्थ—कैलाश पर्वत की एक रमणीक शिखर पर एकान्त में बैठे हुए शिवजी से श्रीपार्वतीजी ने अज्ञान की तरह पूछा महाराज ! आप इस सम्पूर्ण ब्रह्मांड के नाथ हैं और इस संसार के उत्पत्ति स्थिति और संहार कर्ता आप ही हैं ॥ १ ॥

त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वर ॥ २ ॥

अर्थ—सब प्राणी चतुर्मुख ब्रह्म, मन्वन्तरादि अवतार धारण करके विष्णु और इन्द्रादिक देवता आपका अर्चन वन्दन करते हैं फिर हे देवेश ! हे महेश्वर ! आप से भी परै कौनसा देव है जिसकी उपासना में तत्पर रहते हो ॥ २ ॥

आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते मम शङ्कर ।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिंधि शङ्कर ॥ ३ ॥

अर्थ—हे कल्याणकारी शङ्कर ! इससे मुझे अत्यन्त आश्चर्य है अतएव हे महाप्राज्ञ ! मेरे प्राणाधार ! आप मेरे इस सन्देह को दूर करिये ॥ ३ ॥

❀ श्रीमहादेव उवाच ❀

धन्यासि कृतपुण्याऽसि पार्वति प्राणवल्लभे ।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने ॥ ४ ॥

अर्थ—महादेवजी बोले—हे हिमाचल की बेटी ! हे प्राणप्रिये ! हे शोभन-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुखि ! तेने यह भगवन्नाम कीर्तन स्तोत्र जो गुप्त से भी अति गुप्त है सो पूछा है इससे तू धन्य है तू कृतपरोपकारा है ॥ ४ ॥

स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

अर्थ--हे महादेवि ! यद्यपि यह स्त्रियों के स्वभाव से विरुद्ध है क्योंकि नीतिशास्त्र में लिखा है कि झूंठ साहस, माया, मूर्खता, लोभ, निर्दयता, अपवित्रता ये स्त्रियों के स्वाभाविक दोष हैं तो भी तू यत्न पूर्वक अत्यन्त गुप्त रखने योग्य जो यह मन्त्र है इसे पूछती है ॥ ५ ॥

दत्ते च सिद्धिहानिःस्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ।
इदं रहस्यं परमम् पुरुषार्थप्रदायकम् ॥ ६ ॥

अर्थ--अपने अभीष्ट पदार्थ को देना सिद्धि का हानि कारक होता है अतएव परम उत्कृष्ट पुरुषार्थ चतुष्टय का दाता यह रहस्य अत्यन्त गोपनीय है ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन रत्नौघमाणिक्यतुरङ्गमगजादिकम् ।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम् ॥ ७ ॥

अर्थ—इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से अन्न, वस्त्र, सुवर्ण, चांदी, रत्न, मणि, हाथी, घोड़ा, प्राप्त होते हैं और अन्त में महामोक्ष रूप जो उत्तम पदार्थ है सो मिल जाता है।७।

तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ।
योऽसौ निरंजनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः ॥ ८ ॥

अर्थ—हे प्रिये ! जो प्रश्न तूने किया है उसका उत्तर अच्छे प्रकार से तेरे सामने कहता हूँ जो सत् और निर्विकार स्वरूप भगवान् हैं ॥ ८ ॥

संसारसागरोत्तारकारणाय सदा नृणाम् ।
श्रीरंगादिकरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति ॥ ९ ॥

अर्थ—जो मनुष्यों को संसार सागर से पार करने के लिये श्री रङ्ग आदि रूप से तीनों लोकों में व्यापक हैं ॥ ९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततोऽलौका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः ।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः ॥१०॥

अर्थ--वह महा मोह युक्त विष्णु भगवान् की भक्ति से रहित मूर्ख मनुष्य सम्पूर्ण निश्चय पदार्थ को नहीं जानते है ॥ १० ॥

निरंजनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः ।
वृन्दावनविहाराय गोपालं रूप मुद्वहन् ॥ ११ ॥
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन् ।
अंशांशेभ्यःसमुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः ॥ १२ ॥

अर्थ--नारायण हरि निरञ्जन निराकार भक्ति से प्रीति करने वाले और वृन्दावन में विहार करने के हेतु गोपाल रूप धारण करने वाले,मुरली वादनाधारी,श्रीराधिकाजी में अत्यन्त प्रीति कर्ता,मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामनादि निज अंश और नर नारायण, धन्वन्तरि, परशुराम, कपिल, ऋषभ, सनकादि, नारद, व्यासादि के रूप करके युक्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षोडशकलाओं से पूर्ण ॥ ११ ॥ १२ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान् नन्दगोपवरोद्यतः ।
धरिणीरूपिणी माता यशोदानन्ददायिनी ॥१३॥
द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः ।
ब्रह्मणाऽभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि ॥ १४ ॥

अर्थ——सबके आनन्द दाता श्रीकृष्णचन्द्र षडैश्वर्य सम्पन्न भगवान् को ब्रह्मा ने नन्दगोप को दिया और वर सफल करने में उद्यत, धरिणी रूपिणी और अपनी पालने हारी माता यशोदा को सुख दिया। उन आनन्द दायक भगवान की जब वसुदेव देवकी दोनों ने प्रार्थना की और पृथ्वी के भार दूर करने को ब्रह्मा और अन्य सब देवताओं ने प्रार्थना की ॥ १३ ॥ १४ ॥

जातोऽवन्यांमुकुन्दोऽपि मुरलीवेदरेचिका ।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले ॥१५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

अर्थ--तब वेद के उच्चारण करने वाली वन में पैदा हुई ऐसी मुरली से प्रतिज्ञा करके "गच्छदेवव्रज भद्रे" ने पृथ्वी में अवतार लिया ॥ १५ ॥

संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम्।
एतज्ज्योतिरहं वेद्यं चिंतयामि सनातनम् ॥१६॥

अर्थ--इस संसार की सार भूत और मूलरूप श्यामल और उज्वल सबसे स्तुति करने योग्य जो यह ज्योति है उसी का मैं निरन्तर ध्यान करता हूँ ॥ १६ ॥

गौरतेजो विनायस्तु श्यामतेजः समर्चयेत्।
जपेद्वाध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे ॥१७॥

अर्थ--और हे शिवे! कल्याणि! जो मनुष्य गौर तेज राधिकाजी के बिना, श्याम तेज केवल श्रीकृष्णचन्द्र का भेद बुद्धि से अर्चन स्मरण ध्यान करते हैं सो भी पातकी होते हैं ॥ १७ ॥

स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजो भेदान्महेश्वरि ॥ १८ ॥

अर्थ--हे महेश्वरी ! जो भेद बुद्धि से ध्यान करता है वह ब्रह्मघाती, मद्यपानकर्ता सुवर्णापहारी, गुरु स्त्री गामी और गो घातक होता है । अर्थात् ऐसे पापियों को जो पाप लगते हैं यही सब पाप उसको भी लगते हैं जो राधा और कृष्ण में भेद समझ कर केवल कृष्ण का ही स्मरण करते हैं ।

तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् ॥ १९ ॥

अर्थ--अतएव श्याम गौर भेद करके दो प्रकार की राधा माधव की मूर्ति है तथापि उनको भिन्न भिन्न न जाने, भक्ति करके एक ही जाने सो हे महादेवि ! श्री गोपालजी ने स्वयम् यह अपना रहस्य राधिकाजी से कहा है ॥ १९ ॥

दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्तिक्यां रासमण्डले ।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः ॥ २० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो पा ल स ह स्र नाम

अर्थ– कार्तिक की पूर्णमासी को रासस्थल में श्रीकृष्ण के दर्शन को दुर्वासामुनि आये सो मन में विचार करने लगे कि देखो अच्युत भगवान गोपबन्धुओं के संग कैसे रमण करते हैं इस संदेह के दूर करने को राधिकाजी ने संदेह निवारणार्थ प्रश्न किया ॥ २० ।

निरञ्जनात्समुत्पन्नं मयाधीतं जगन्मयि ।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च ॥२१॥

अर्थ – हे जगन्मयि सर्वज्ञ ! मैंने सुना है कि आप तो निरंजन ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं। तब श्रीकृष्ण भगवान ने राधिकाजी और नारदजी से वह रहस्य कहा था सो मुझे राधिकाजी से प्राप्त हुआ ॥ २१ ॥

ततो नारदतः सर्वं विरला वैष्णवास्तथा ।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२२॥

अर्थ-–तब नारद द्वारा बहुत थोड़े विष्णु भक्ति परायण जो मनुष्य हैं सो जानते हैं। अतएव हे देवेशि ! इस रहस्य को कलियुग में यत्न पूर्वक गोप्य रक्खे ॥ २२ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि ।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेनगोपयेत् ॥२३॥

अर्थ—हे सुरेश्वरी ! जो पाप ब्रह्म हत्या के करने से होता है वही पाप गोपाल मन्त्र के शठ कृपण और दम्भी को देने से होता है इससे इसे यत्न पूर्वक गोप्य रक्खे ॥ २३ ॥

ॐ अस्य श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य ॥ श्री नारद ऋषिः॥ अनुष्टुप्छन्दः॥ श्रीगोपालो देवता ॥ कामोबीजम् ॥ मायाशक्तिः ॥ चन्द्रःकीलकम् ॥ श्रीकृष्ण चन्द्र भक्तिरूपफलप्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रजपे विनियोगः ॥ अथवा ॥

ॐऐं क्लींबीजम् ॥ श्रीं ह्रीं शक्तिः॥ श्रीवृन्दावननिवासः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कीलकम् ॥ श्रीराधाप्रियंपरम्ब्रह्मेति मन्त्रः । धर्मादि चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः॥ॐनारदऋषये नमः शिरसि ॥ ॥ अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे ॥ श्रीगोपाल देवतायै नमो हृदये ॥ क्लीं कीलकाय नमो नाभौ । ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये ॥ श्रीं कीलकायनमः पादयोः ॥ क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥ इतिमूलमन्त्रः ॥

ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां०॥ ॐ क्लूं मध्यमा ॥ ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः० । ॐ क्लौं कनिष्ठिका०॥ ॐ क्लः करतलकर पृष्ठाभ्यांनमः ॐ क्लां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हृदयाय नमः ॥ ॐ क्लीं शिरसेस्वाहा । ॐ क्लूं शिखायै व०॥ ॐ क्लैं कवचाय हुम् ॥ ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ क्लः अस्त्राय फट् ।

अथमूल मन्त्र न्यासः

क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ गोविंदाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ गोपीजन० अनामिकाभ्यांनमः ॥ वल्लभायकनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥

अथ हृदयादिन्यासः ॥ क्लीं हृदयाय नमः । कृष्णाय शिरसे स्वाहा ॥ गोविन्दाय शिखायै वषट् ॥ गोपी-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जन०कवचायहुम् ॥ वल्लभायनेत्रत्रयाय वौषट्॥ स्वाहा अस्त्रायफट॥ इति हृदयादिन्यासः ॥

अर्थ—इस गोपाल सहस्रनाम स्तोत्र रूप मन्त्र के प्रवर्तक ऋषि श्रीनारद जी हैं बत्तीस बत्तीस अक्षर के अनुष्टुप्छन्द हैं श्री गोपाल उपास्य देवता हैं कामबीज जो क्लीं यह सार भूत है मायाबीज जो ह्रीं सो शक्ति है चन्द्रबीज जो ग्लौं सो कीलक है। इस प्रकार श्रीगोपालजी का ध्यान कर उनके भक्ति रूप फल की प्राप्ति के निमित्त दक्षिण हाथ में जल लेके छोड़ देवे।

तथा ऊपर लिखे हर एक मन्त्र को उच्चारण करके अपने हाथों की अंगुलियों तथा प्रत्येक अंग को स्पर्श करता जाय।

❋ अथ ध्यानम् ❋

ॐ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं। नासाग्रे वरमौक्तिकम् करतले वेणुं करे कङ्कणम्॥ स-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली । गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥१॥

अर्थ—श्री गोपाल चूडामणि सर्वोत्कर्ष करके वर्ते हैं कैसे हैं श्री गोपाल आपके ललाट में कस्तूरी की खौर शोभित है वक्षस्थल में कौस्तुभमणि है नासिका के अग्रभाग पर सुन्दर मोती का लोलक है हाथ में बन्शी है पहुंचे पर कंकण धारण कर रहे हैं सम्पूर्ण अंग पर हरिचन्दन लग रहा है कण्ठ में स्वच्छ मोतियों की माला पडी है गोपीजनों के मध्य में विराजमान हैं ॥ १ ॥

फुल्लेन्दीवर कान्तिमिन्दुवदनं वर्हावतंसप्रियं । श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुंदरम् ॥ गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविंदं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्ग भूषंभजे ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ--विकसित नील कमल की सी कांति है, चन्द्रमा का सा आनन्ददायी मुख है, मोर पंख सिर का प्रियभूषण है, हृदय में श्रीवत्स का चिह्न है, कौस्तुभमणि को धारण करें हैं, स्वच्छ पीताम्बर पहरे हैं। श्री कृष्ण की देह में जो गोपियों के नयन कमल का प्रतिबिंब है सोई मानों कमलों से पूजा होती है, गौ और गोप के समूह से घिरे हुए हैं, परम दिव्य जो वेणु है उससे कामबीज "क्लं" का गान करते हैं और नाना प्रकार के दिव्य भूषण से भूषित अंग हैं ऐसे, गोविंद का मैं मन कर्म वाणी करके ध्यान करता हूँ ॥ २ ॥

❀ इति ध्यानम् ❀

ॐ क्लीं देवःकामदेवः कामबीजशिरोमणिः ।
श्रीगोपालो महीपालः सर्व वेदांतपारगः ॥ १ ॥

अर्थ--अब यहाँ से भगवान् की नामावली प्रारम्भ होती है । देव-जिसकी सब जगह पहुंच हो, जो क्रीडा करता हो । कामदेवः-भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाला तथा मदन की तरह सुंदर है । कामवीज शिरोमणिः अर्थात् कामदेव के मुख्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारण हैं। श्रीगोपाल-जो राधा, रुक्मिणि, लक्ष्मी, तथा गौओं की रक्षा करने वाले हैं। महीपालः-जो पृथ्वी का पालन पोषण करने वाले हैं। सर्व वेदांत पारगः-वेद और वेदांत का तत्व जानने वाले हैं॥ १॥

धरणी पालको धन्यः पुण्डरीकः सनातनः।
गोपतिर्भूपतिःशास्ता १० प्रहर्ता विश्वतोमुखः॥ २॥

अर्थ--साक्षात् धैर्य मूर्ति तथा पृथ्वी के पालन करने वाले हैं इस कारण आप "धरणी पालकः" हैं, संसार में पूजनीय तथा परम ऐश्वर्यवान् होने से आप "धन्य हैं। कमल की तरह आप सुशोभित हैं इससे आप 'पुंडरीक' हैं। सदा विद्यमान रहने से आप 'सनातन' हैं। गोपवेश धारण करने से आप गौओं के रक्षक हैं इससे 'गोपतिः' हैं। पृथ्वी का भार उतार कर रक्षा करने से 'भूपतिः' हैं। महात्माओं को धर्मोपदेश तथा अधर्मियों को दण्ड देने से आप 'शास्ता' हैं। भक्तों का क्लेश नाश करने से 'प्रहर्ता' हैं। सम्पूर्ण देवताओं के प्रधान हैं अथवा अनन्त मुख होने से आप 'विश्वतो मुखः' हैं॥ २॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदिकर्ता महाकर्ता महाकालः प्रतापवान् ।
जगज्जीवो जगद्धाता जगद्धर्ता जगद्वसुः २०॥ ३ ॥

अर्थ——आदि कर्ता—ब्रह्मादिक के सिरजन हार । महाकर्ता-ब्रह्मादिक को भी प्रेरणा करने वाले । महाकालः-सबके संहार कर्ता । प्रतापवान-बड़े प्रतापी । जगज्जीव-जगत के प्राण धारक । जगद्धाता-जगत की रचना करने वाले । जगद्धर्ता-जगत का पालन पोषण करने वाले । जगद्वसुः-संसार में सर्वान्तर्यामी ॥ ३ ॥

मत्स्यो भीमःकुहूभर्ता हर्ता वाराहमूर्तिमान् ।
नारायणो हृषीकेशो गोविंदो गरुडध्वजः ॥ ४ ॥

अर्थ——मत्स्यो—मत्स्य रूप धारण करने वाले । भीमः-बड़े बलधारी । कुहूभर्ता-अमावस्या की अन्धकार मयी रात्रि के पोषक । हर्ता-पापों तथा दुखों का नाश करने वाले । वाराह मूर्तिमान्-वाराह रूप से पृथ्वी की रक्षा करने वाले, नारायणो-मनुष्य समूह को आश्रय देने वाले विष्णु भगवान् । हृषीकेशोः-इन्द्रियों के नियन्ता । गोविन्दो-गौओं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के रक्षक । गरुड़ध्वजः-गरुड़ की सवारी करने वाले ॥ ४ ॥

गोकुलेन्द्रो३०महाचन्द्रःशर्वरी प्रियकारकः ।
कमला मुखलोलाक्षः पुण्डरीकशुभावहः ॥ ५ ॥

अर्थ——गोकुलेन्द्रः-गौ समूह के इन्द्र हैं । महाचन्द्रः——चन्द्रमा को भी प्रकाशित करने वाले । शर्वरी प्रिय कारकः-सूर्य के ताप से तपी हुई रात्रि को चन्द्रमा की तरह ठण्डक देने वाले । कमला मुखलोलाक्षः-लक्ष्मी के मुख दर्शन को जिनके नेत्र आसक्त रहते हैं । पुण्डरीक शुभावहः कृष्ण रूप से सम्पूर्ण शुभ फल के दाता ॥ ५ ॥

दुर्वासाः कपिलो भौमः सिंधु सागरसङ्गमः ।
गोविन्दो४०गोपतिर्गोत्रःकालिन्दीप्रेमपूर्वकः ॥६॥

अर्थ——दुर्वासाः-संसार रूप वृक्ष के फल जिनके भोजन हैं । कपिलः-उपनिषद् भाग का व्याख्यान करके श्रुति की रक्षा करने के लिये कपिल रूप से जन्म लेने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाले। भौमः-अश्वत्थ रूप से भूमि के गर्भ से प्रकट होने वाले। सिन्धु सागर संगमः-गङ्गा और समुद्र के संगम में विहार करने वाले। गोविन्दोः-यज्ञ के फल भोक्ता। गोपतिः-सूर्य रूप किरणों के पति। गोत्रः-स्वामी रूप से पृथ्वी के पालक। कालिन्दी प्रेम पूरकः-जल क्रीड़ादि से यमुनाजी के प्रेम को बढ़ाने वाले ॥ ६ ॥

गोपस्वामी गोकुलेंद्रो गोवर्धनवरप्रदः।
नंदादि गोकुलत्राताऽदाताऽदारिद्र्यभंजनः ॥ ७ ॥

अर्थ—गोपस्वामी-ग्वालों के स्वामी। गोकुलेन्द्रः-गायों के झुण्ड के अधिपति। गोवर्द्धन वर प्रदः-गौओं का पालन करने के लिए अहीरों को वरदान देने वाले। नन्दादि गोकुल त्राता-नन्दादि गोपों तथा गौ समूह के रक्षक। दाता—सम्पूर्ण वस्तुओं के देने वाले। दारिद्र्य भञ्जनः-दरिद्रता के नाश करने वाले ॥ ७ ॥

सर्वमंगलदाता ५० च सर्वकामप्रदायकः।
आदिकर्ता महीभर्ता सर्वसागरसिंधुजः ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—सर्व मङ्गल दाता—सम्पूर्ण मंगल वस्तुओं के दाता हैं । सर्वकाम प्रदायकः-सम्पूर्ण अभिलाषाओं के पूर्ण करने वाले । आदि कर्ता—संसार के मुख्य कर्ता । महीभर्ता-पृथ्वी के रक्षक । सर्व सागर सिन्धुजः-सम्पूर्ण सागर और सिन्धुओं को उत्पन्न करने वाले ॥ ८ ॥

गजगामीगजोद्धारी कामी कामकलानिधिः ।
कलङ्करहितश्चंद्रो६० बिम्बास्यो बिम्बसत्तमः ॥९॥

अर्थ—गज गाम-हाथी की सी चाल चलने वाले । गजोद्धारी-ग्राह से गज की रक्षा करने वाले । कामी-सब सुन्दर वस्तुओं के इच्छुक । काम कला निधिः—चौंसठ काम कला करके युक्त । कलंक रहितः—निष्कलंक । चन्द्रः-तारागण में चन्द्रमा के समान । बिम्बास्यः—बिम्बा फल के समान प्रफुल्लित मुख । बिम्ब सत्तमः—बिम्बा की तरह श्रेष्ठ ॥ ९ ॥

मालाकारः कृपाकारः कोकिलास्वरभूषणः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामो नीलाम्बरोदेवो हलीदुर्दममर्दनः ॥ १० ॥

अर्थ—मालाकारः–कृपाकारः–मालाकार में कृपा मूर्ती होने से। कोकिलास्वर भूषणः–कोकिला के स्वर के भूषण अर्थात् वसन्त ऋतु रूपी होने से। रामः–योगी जन आप में रमण करते हैं। नीलाम्बरः–नील वस्त्र धारण करने वाले। देवः-सर्वत्र इच्छानुसार विचरने वाले। हली–हल को धारण करने वाले। दुर्दम मर्दनः–नाग्नजिती के स्वयम्बर में वृषभों के मारने वाले ॥ १० ॥

सहस्राक्षपुरीभेत्ता ७० महामारी विनाशनः।
शिवः शिवतमोभेत्ता बलारातिप्रपूजकः ॥११॥

अर्थ—सहस्राक्ष पुरी भेत्ता–इन्द्र की पुरी को भेदन करने वाले। महामारी विनाशनः–महामारी के नाशकर्त्ता। शिवः–शांति रूप होने से। शिवतम–अति शांति स्वरूप। भेत्ता–भक्तों की विपत्ति नाश करने वाले। बलाराति प्रपूजकः–शक्ति शाली शत्रुओं को हरा कर उनसे पूजे जाने वाले ॥ ११ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुमारी वरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः ।
नरोनारायणो८०धीरो राधापतिरुदारधीः ॥१२॥

अर्थ— कुमारी वरदायी—कन्याओं को वर देने वाले । वरेण्यो—सर्वोत्तम । मीनकेतनः—ध्वजा में मत्स्य का चिह्न होने से । नरः—विप्रादि पूजन में नम्र तथा निर्विकार । नारायणः—क्षीर सागर में निवास करने वाले । धीरः—बुद्धि देने वाले । राधा पतिः—राधारानी के प्राण प्यारे । उदारधीः—उदार बुद्धि वाले ॥ १२ ॥

श्रीपतिःश्रीनिधिःश्रीमान्मापतिःप्रतिराजहा ।
वृन्दापतिःकुलग्रामी९०धामी ब्रह्मसनातन ॥१३॥

अर्थ—श्रीपतिः—लक्ष्मीजी के पति । श्रीनिधिः—शोभा के समुद्र । श्रीमान्—शोभायमान होने से । मापतिः—सत्पुरुषों को मान देने वाले । प्रतिराजहा—अपने विपरीत राजाओं का नाश करने वाले । वृन्दापतिः-तुलसी अथवा राधिका के पति । कुलग्रामी—फूट में एकता पैदा करने वाले । धामी—सर्वत्र निवास करने से । ब्रह्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सनातनः--अविनाशी ब्रह्म ॥ १३ ॥

रेवती रमणो रामश्चंचलश्चारुलोचनः ।
रामायणशरीरोऽयं रामी१००रामःश्रियःपतिः॥१४॥

अर्थ---रेवती रमणः-रेवती के भर्ता होने से। रामः-योगीजन जिस नाम को लेकर सदा आनन्दित रहते हैं। चंचलः—कभी एक स्थान पर न स्थिर रहने वाले। चारु लोचनः—सुन्दर नेत्र वाले। रामायण शरीरोऽयं—लीला युक्त रामायण स्वरूप। रामी—सदा रमण रूप लीला करने वाले। रामः—दशरथजी के घर जन्म लेने वाले। श्रियःपतिः—लक्ष्मीजी के पति होने से ॥ १४ ॥

शर्वरः शर्वरी शर्वः सर्वत्र शुभदायकः ।
राधाराधयिताऽराधीराधाचित्तप्रमोदकः ॥१५॥

अर्थ—शर्वरः—प्राणियों के अशुभ को दूर करने वाले। शर्वरी—रात्रि सदृश होने से। शर्वः—सबमें व्यापक होने से। सर्वत्र शुभदायकः—सर्वत्र शुभ फल के देने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाले। राधाराधयिता–नित्य प्रति आराधन किये जाने से। आराधी–आराधना करने के योग्य होने से। राधा चित्त प्रमोदकः–राधिकाजी के चित्त को प्रसन्न करने वाले ॥ १५ ॥

राधारतिसुखोपेतो११०राधामोहनतत्परः।
राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ॥१६॥

अर्थ—राधारति सुखो पेतः–राधिकाजी के संग रमण सुख करके युक्त होने से। राधा मोहन तत्परः–राधिकाजी को मोहने में तत्पर रहने से। राधावशीकरः–राधिकाजी को अपने प्रभाव से वश में करने से। राधा हृदयाम्भोज षट् पदः–राधिका जी के हृदय कमल में भ्रमरवत् रस ग्राहक होने से ॥ १६ ॥

राधालिंगनसंमोहो राधानर्तनकौतुकः।
राधासंजातसंप्रीती राधाकामफलप्रदः ॥१७॥

अर्थ—राधालिङ्गन संमोहः–राधिका के आलिंगन में हर्ष प्राप्त करने से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधानर्तन कौतुकः—राधा के संग नृत्य रूप क्रीड़ा करने से। राधा संजात संप्रीतीः—राधा में अत्यन्त प्रेम होने से। राधा काम फल प्रदः—राधा की कामनाओं को पूर्ण करने से ॥ १७ ॥

वृंदापतिःकोशनिधिःकोकशोकविनाशकः १२०
चंद्रापतिश्चंद्रपतिश्चंडकोदण्डभंजनः ॥ १८ ॥

वृन्दापतिः—वृन्दा के स्वामी होने से। कोशनिधिः—अनेक ब्रह्मांड भरे रहने से। कोक शोक विनाशकः—सूर्य रूप धारण करके चकवा चकवी के वियोग जन्य शोक को दूर करने से। चन्द्रापतिः—चन्द्रावती सखी के पति होने से। चन्द्रपतिः—चंद्र वंशीय यदु के पति होने से। चण्ड को दण्ड भञ्जनः—रुद्र धनुष के तोडने से ॥१८॥

रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः।
आत्मारामोजितक्रोधमोहोमोहान्धभंजनः ॥१९॥

अर्थ—रामः-दाशरथिः—दशरथ के पुत्र राम रूप होकर संसार में जन्म लेने से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामो भृगुवंश समुद्भवः-भृगुवंश में परशुराम रूप के धारण करने से। आत्मा रामो-अपने आप में रमण करने से। जित क्रोध-क्रोध को जीतने से। मोहः—मोह रूप होने से। मोहान्ध भञ्जनः—मोह रूप अन्धकार को नष्ट करने से ॥ १६ ॥

वृषभानु १३० र्भवोभावीःकाश्यपिःकरुणानिधिः ।
कोलाहलोहलीहालीहेलीहलधरप्रियः १४०॥२०॥

अर्थ—वृषभानुः—वृषभानु के घर राधा रूप में जन्म लेने से। भवः=भक्तों के कल्याणार्थ संसार में जन्म लेने से। भावी—कर्म फल की भावना कराने से। काश्यपिः—कश्यप के पुत्र होने से। करुणानिधिः—दया के भण्डार होने से। कोलाहलः—मेघ रूप होने से। हली- हल धारण करने से। हाली—हल द्वारा यवादिक उत्पन्न करने से। हेली—खेती उत्पन्न करने से। हलधर प्रियः—हलधर के प्रिय लघु भ्राता होने से ॥२०॥

राधामुखाब्जमार्तण्डोभास्करोरविजोविधुः ।
विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वारुणीप्रियः ॥२१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—राधा मुखाब्ज मार्तण्डः-राधा के मुख कमल को सूर्य रूप हैं। भास्करः--लोक के प्रकाश कर्ता हैं। रविजो विधुः-जो चन्द्रमा रूप बनकर सूर्य से प्रकाश लेकर रात्रि का अन्धकार नष्ट करते हैं। विधिः--जगत का विधान करते हैं। विधाताः--संसार के रचयिता हैं। वरुणः--वरुण रूप से वृष्टि करते हैं। वारुणः--वरुण के भृगुरूप पुत्र हैं। वारुणी प्रियः-वरुण कन्या के प्रिय हैं॥ २१॥

रोहिणीहृदयानंदी १५० वसुदेवात्मजोबली ।
नीलाम्बरो रौहिणेयो जरासंधवधोऽमलः ॥ २२ ॥

अर्थ—रोहिणी हृदया नन्दः--रोहिणी के हृदय को प्रसन्न करते हैं। वसुदेवात्मजः=वसुदेव के पुत्र हैं। बली-प्रबल पराक्रमी हैं। नीलाम्बरः--नीले वस्त्र धारण करते हैं। रौहिणेयः-रोहिणी के पुत्र हैं। जरासन्धवधः-जरासंध का वध किया था। अमलः- सदा पवित्र हैं॥ २२॥

नागोनवाम्भो विरुदो वीरहा १६० वरदो बली ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपथोविजयीविद्वान् शिपिविष्टःसनातनः ॥२३॥

अर्थ---नागः--शेष रूप में पृथ्वी को धारण करते हैं। नवाम्भः--वरुण रूप होकर हरसाल नया जल वर्षाते हैं। विरुदः--वहिर्मुख प्राणियों को रोदन कराते हैं। वीरहा-क्रोधित होने पर महाबलवान शत्रु को भी मार सकते हैं। वरदः--इच्छित वरदान देते हैं। बली--बला जो लक्ष्मी सो आपकी ही है। गोपथः-आपकी प्राप्ति का मार्ग ज्ञान है। विजयी-सर्वत्र शत्रुओं पर जय पाते हैं। विद्वान्-सर्वज्ञ हैं। शिपिविष्टः-पशुपति रूप से संसार के कल्याण कर्ता हैं। सनातनः-सनातन ऋषिरूप हैं ॥ २३ ॥

परशुरामवचोग्राही वरग्राही शृगालहा १७०।
दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः ॥ २४ ॥

अर्थ---परशुराम वचोग्राही-रामावतार में परशुराम की बात मानी थी। वरग्राही मधुकैटभादिक से वर प्राप्त किया था। शृगालहा-मिथ्या बसुदेव का वध किया था। दमघोषोपदेष्टा-शिशुपाल को मार कर उसके पिता दमघोष को उपदेश दिया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रथग्राही-अर्जुन के सारथी थे। सुदर्शनः-आपका दर्शन अति सुन्दर है ॥ २५ ॥

वीरपत्नी यशस्त्राता जराव्याधिविघातकः।
द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः ॥ २५ ॥

अर्थ---वीर पत्नी-जिनकी स्त्रियां भी वीर हैं। यशस्त्राता-अपनी कीर्ति की रक्षा करने वाले हैं। जराव्याधि विघातकः-बुढ़ापे के कष्ट को नाश करने वाले हैं। द्वारका वासतत्वज्ञः-द्वारिका बास के गूढ से गूढ तत्वों को जानते हैं। हुताशन वरप्रदः--अग्नि को वरदान देने वाले हैं ॥ २५ ॥

यमुनावेगसंहारी नीलाम्बरधरःप्रभुः १८० ।
विभुः शरासनो धन्वीगणेशोगणनायकः ॥२६॥

अर्थ—यमुनावेग संहारी-बलभद्र रूप धारण करके यमुना के प्रवाह को रोका था। नीलांबर धरः-नीलाम्बर धारण करते हैं। प्रभुः-समस्त संसार के स्वामी हैं। विभुः-भक्तों को अभीष्ट फल देते हैं। शरासनः-जो धनुष धारण करने वाले हैं। धन्वी-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनुर्विद्या के पण्डित हैं। गणेशः-गौ और गोपियों के पालक हैं। गणनायकः-गौ और गोपियों के नियन्ता हैं॥ २६॥

लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंशविनाशनः।
वामनो १९० वामनीभूतो वमनो वमनारुहः ॥२७॥

अर्थ—लक्ष्मणः-सबके जानने वाले हैं, लक्षणः-शुभ लक्षण सम्पन्न हैं। लक्ष्यः-सब भक्तों को दर्शनीय है। रक्षोवंशविनाशनः-राक्षसों के वंश का नाश करने वाले हैं। वामनः-वामन रूप हैं। वामनी भूतः-अपने वृहत रूप का छोटा रूप किया था। अवामनः-आपका देह वृहत है। वमनारुहः-लघु कामों को करने वाले॥ २७॥

यशोदानन्दनः कर्त्ता यमलार्जुनमुक्तिदः।
उलूखली महामानी दामबद्धाह्वयी शमी२००।२८।

अर्थ—यशोदानन्दनः-पुत्र रूप होकर यशोदा को प्रसन्न करते हैं। कर्त्ताः-संसार के रचयिता हैं। यमलार्जुन मुक्तिदः-यमला और अर्जुन को मुक्त किया था! उलूखली-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओखली में अपनी इच्छा से बंध गये थे। महामानी-आपका अतिशय सम्मान है, दामवद्धाह्वयी-यशोदा ने रस्सी से बांध दिया था। शमी-पूर्ण शांति स्वरूप हैं ॥२८॥

भक्तानुकारी भगवान् केशवोऽचलधारकः ।
केशिहा मधुहा मोही वृषासुरविघातकः ॥ २९ ॥

अर्थ—भक्तानुकारी-भक्तों को अङ्गीकार करते हैं। भगवान्-षड्गुणों करके युक्त हैं। केशवः-ब्रह्मांड के ईश्वर हैं। अचल धारकः-गोवर्द्धन पर्वत धारण किया था। केशिहा-केशी दानव के संहार कर्ता हैं। मधुहा-मधुनामक दैत्य के नाश करने वाले हैं। मोही-भक्तों में मोह रखते हैं। वृषासुर विघातकः-वृषासुर को वध किया था ॥

अघासुरविनाशी च पूतनामोक्षदायकः २१०।
कुब्जाविनोदीभगवान् कंसमृत्युर्महामखी ॥३०॥

अर्थ—अघासुर विनाशी-अघासुर का नाश किया था। पूतना मोक्षदायकः-पूतना को मोक्ष दान दिया था। कुब्जा विनोदी-कुब्जा को आनन्दित किया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भगवान्—अनन्त संपत्ति शाली हैं। कंसमृत्युः—कंस के वधकर्ता होने से। महामखी—अनेक बड़े बड़े यज्ञ करने से ॥ ३० ॥

अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान्।
कंदर्पकोटिलावण्यश्चंद्रकोटिसुशीतलः ॥ २२० ॥

अर्थ—अश्वमेध—प्रजापति रूप होने से। वाजपेयः—बृहस्पति रूप होने से। गोमेधो—इन्द्रियों का निग्रह करने से। नरमेधवान्—नरमेध रूप होने से। कन्दर्प कोटिलावण्यः—करोड़ों कामदेव की सुन्दरता धारण करने से। चंद्रकोटि सुशीतलः—करोड़ों चंद्रमा की तरह शीतल होने से ॥ ३१ ॥

रविकोटिप्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः।
ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्ता च कमलावाञ्छितप्रदः ॥ ३२ ॥

अर्थ—रवि कोटि प्रतीकाशः—सौ करोड़ सूर्यवत् प्रकाशवान् होने से। वायु कोटि महाबलः—करोड़ों वायु के सदृश पराक्रम रखने से। ब्रह्मा—प्रजा को बढ़ाने से। ब्रह्मांड

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्ता—ब्रह्माण्डों के कर्ता होने से। कमला वाञ्छित प्रदः-लक्ष्मी को वाञ्छित फल देने वाले हैं ॥ ३२ ॥

कमली कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः ।
कमलाव्रतधारीचकमलाभः२३०पुरन्दरः ॥३३॥

अर्थ—कमली—वक्षस्थल में लक्ष्मी का चिह्न होने से। कमलाक्षः-कमलवत् ताप दूर करने वाली आंख हैं। कमला मुख लोलुपः-लक्ष्मी के सुन्दर मुख पर मोहित होने से। कमला व्रतधारी—केवल एक लक्ष्मी का ही व्रत धारण करने से। कमलाभः—कमल की तरह सुन्दर हैं। पुरन्दरः-असुरों के पुर का विध्वंस करने से ॥३३॥

सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायीमहोत्कटः ।
तारकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः ॥३४॥

अर्थ—सौभाग्याधिक चित्तः—जिन का मन सदैव उन्नति में लगा रहता है। महामायी महोत्कटः—बड़े ही मायावी हैं। तारकारिः—तारक नामक राक्षस के शत्रु होने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से। सुरत्राता—देवताओं के रक्षक हैं। मारीच क्षोभकारकः—मारीच राक्षस को अपने बाण से सौ योजन पर फेंक कर उसे लज्जित किया था॥ ३४॥

विश्वामित्रप्रियोदांतोरामो२४०राजीवलोचनः।
लंकाधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः ॥३५॥

अर्थ—विश्वामित्र प्रियः—विश्वामित्र ऋषि को अत्यन्त प्यारे होने से। दांतः—जितेन्द्रिय होने से। रामः-प्रलय काल में विश्व को अपनी कुक्षि में समेट लेने से। राजीवलोचनः—कमलवत् नेत्र होने से। लंकाधिप कुलध्वंसी-रावण के कुल का संहार करने से। विभीषण वरप्रदः—विभीषण को वरदान देने से॥ ३५॥

सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः।
खरदूषणसंहारी साकेतपुरवासनः ॥ ३६ ॥

अर्थ—सीतानन्द करः—जानकी के आनंद दाता होने से। रामः—रमणादिक दिव्य रूप धारण करने से। वीरः—एक सराहनीय योधा हैं। वारिधि बन्धनः—समुद्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर पत्थर का पुल बनाने से। खरदूषण संहारी—खरदूषण का संहार करने से। साकेत पुरवासनः—साकेतपुर में निवास स्थान है ॥ ३६ ॥

चन्द्रावलीपतिः२५०कूलःकेशिकंसवधोऽमरः।
माधवोमधुहामाध्वीमाध्वीकोमाधवीविभुः ॥३७॥

अर्थ—चन्द्रावली पतिः—चन्द्रावली सखी के पति होने से। कूलः-यमुना तट आपका क्रीडा स्थान है। केशि कंस वधः-केशी और कंस राक्षसों का विनाश किया था। अमरः—कभी मृत्यु न होने से। माधवः—लक्ष्मी के पति हैं। मधुहा—श्री राधा मुख पद्म मकरंद को प्राप्त करने से। माध्वी—अत्यन्त रसिक होने से। माध्वीकः-वंशी द्वारा मधुर गान करने से। माधवी विभुः—बसंत लता में व्यापक होने से ॥ ३७ ॥

मुंजाटवीगाहमानो धेनुकारि२६०र्धरात्मजः।
वंशीवटविहारी च गोवर्द्धनवनाश्रयः ॥३८॥

अर्थ—मुंजाट वीगाह मानः—मुंज के जङ्गलों में घूमने वाले हैं। धेनुकारिः—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धेनुक को मारने से। धरात्मजः—यशोदा के पुत्र होने से। वन्शीवट विहारी-वन्शीवट पर विहार करने से। गोवर्द्धन वनाश्रयः—गौ चारण के हेतु गोवर्द्धन के वन में विचरने से ॥ ३८ ॥

तथा तालवनोद्देशी भाण्डीरवनशंखहा।
तृणावर्तकथाकारी वृषभानुसुतापतिः ॥३९॥

अर्थ—ताल वनोद्देशी—तालवन में घूमने से। भांडीर वन शंखहा—काली नाग को निकाल कर आपने भांडीरवन निशंक किया था। तृणावर्त कथाकारी—तृणावर्त का नाश कर संसार में केवल उसका नाम जीवित रक्खा था। वृषभानुसुतापतिः—वृषभानु की कन्या राधिका के पति होने से ॥ ३९ ॥

राधा प्राणसमो राधा वदनाब्जमधुव्रतः।
गोपीरंजनदैवज्ञो२७०लीलाकमलपूजितः ॥४०॥

अर्थ—राधा प्राणसमः—राधा को प्राणवत प्रिय होने से। राधा वदनाब्ज मधुव्रतः—राधा के कमल रूपी मुख पर भंवर के सदृश आसक्त होने से। गोपी रंजन

Shri Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दैवज्ञः—सम्पूर्ण शृङ्गार से युक्त होकर गोपियों को प्रसन्न करने से। लीला कमल पूजितः—राधिकाजी ने कमलों से आपकी पूजा की थी ॥ ४० ॥

क्रीड़ाकमलसन्दोहो गोपिकाप्रीतिरंजनः।
रंजको रंजनो रङ्गो रङ्गी रङ्ग महीरुहः ॥४१॥

अर्थ—क्रीड़ा कमल सन्दोहः—आपने क्रीड़ा के लिये कमल इकट्ठे किये थे। गोपिका प्रीति रंजनः—गोपियों को अपने प्रेम से प्रसन्न करने वाले। रंजकः—सारे संसार का रंज दूर करने वाले। रंजनः—अपने राग करके भक्तों के मन रङ्गाने से। रंगः—भक्तों के मन आप में रंग जाते हैं। रंगी—आप अनेक प्रभावों करके युक्त हैं। रंग महीरुहः—रंग भूमि में आपने चाणूरादि मल्ल पछाड़े थे ॥ ४१ ॥

कामः २८० कामारिभक्तोऽयंपुराणपुरुषःकविः।
नारदो देवलोभीमो बालो बालमुखाम्बुजः ॥४२॥

अर्थ—कामः—शील सौन्दर्य गुणों करके अति कमनीय होने से। कामारि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्तः–शिवजी आपके भक्त हैं। पुराण पुरुषः--आदि पुरुष हैं। कविः–कविता करने से। नारदः–नारद रूप से संसार में विचरण करने से। देवलः–देवताओं को भी अपनाने से। भीमः-असुरों को डराने से। बालः–शिशुरूप से वट के पत्तों पर शयन करने से। बाल मुखाम्बुजः—लक्ष्मी के मुख कमल को प्रसन्न करने के हेतु आप प्रातः काल के सूर्य हैं॥ ४२॥

अम्बुजोब्रह्मसाक्षी२९०च योगीदत्तवरोमुनिः।
ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदी पवनवल्लभः॥४३॥

अर्थ––अम्बुजः–कच्छप मत्स्य अवतार धारण कर जल में रहने से। ब्रह्म-आप केवल वेद से जाने जाते हैं। साक्षी–विश्व के साक्षात् द्रष्टा होने से। योगी–सर्वत्र उदासीन भी हो तथा भक्तों से योग भी करते हो। दत्तवरः--भक्तों को वर देने वाले हो। मुनिः–इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाले हो। ऋषभः–श्रेष्ठ होने से। पर्वतः–गोवर्द्धन रूप अथवा मेरु होने से। ग्रामः-यूथ रूप में संसार में विद्यमान रहने से। नदीपवन वल्लभः–नदी तथा वायु प्यारे होने से॥ ४३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्मनाभःसुरज्येष्ठोब्रह्मा ३०० रुद्रोऽहिभूषितः।
गणानांत्राणकर्ता च गणेशो ग्रहिलोग्रही ॥४४॥

अर्थ—पद्मनाभः--आपकी नाभि में पद्म है। सुरज्येष्ठो-देवताओं के आप अग्रगण्य हैं। ब्रह्मा--विश्व के उत्पन्न करने वाले हैं। रुद्रः-संहार समय में प्रजा को रोदन कराते हैं। अहिभूषितः--काली आपके चरण चिह्न से शोभित है। गणानांत्राण कर्ता-गौ और गोपी ग्वालों के रक्षा करने वाले हैं। गणेशः--गौ गोपियों के ईश्वर हैं। ग्रहिलः--सूर्यादिक ग्रह नियम पूर्वक आप में निवास करते हैं। ग्रही--भक्तों की अर्पण की हुई वस्तु को प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करते हैं ।। ४४ ॥

गणाश्रयो गणाध्यक्षःक्रोडीकृतजगत्त्रयः।
यादवेन्द्रो ३१० द्वारकेन्द्रोमंथुरावल्लभोधुरी ॥४५॥

अर्थ—गणाश्रयः--देवगण से आश्रित भूत होने से। गणाध्यक्षः-देवगण के स्वामी होने से। क्रोडी कृत जगत्त्रयः--त्रिलोकी आपकी अनुगामी है। यादवेन्द्रः--

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यादवों के पूज्य होने से । द्वारकेन्द्रः--द्वारिकानाथ होने से । मथुरा वल्लभः--आपको अपनी जन्म भूमि मथुरा बहुत प्यारी है । धुरी-सम्पूर्ण जगत की रक्षा के निमित्त भार उठाया है ॥ ४५ ॥

भ्रमरः कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी ।
यमुनावरदाता च काश्यपस्य वरप्रदः ॥४६॥

अर्थ—भ्रमरः--नृत्य करते हुए आप गान करते हैं । कुन्तली-प्रशस्त केश धारण करने से । कुन्ती सुत रक्षी-कुन्ती के बेटे युधिष्ठिरादि की आपने रक्षा की । महामखी-आप यज्ञों की पूजा ग्रहण करते हैं । यमुना वरदाता-यमुनाजी को वर देने से । काश्यपस्य वरप्रदः-पूर्व जन्म में कश्यप को सुतप नाम वर देने से ॥ ४६ ॥

शंखचूड़वधोद्दामो३२० गोपीरक्षणतत्परः ।
पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजोजयः ॥४७॥

अर्थ---शंखचूड़ वधः-शंखचूड़ राक्षस का वध करने से । दामः--उदर में दाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धारण करने से। गोपी रक्षण तत्परः-गोपियों की रक्षा के निमित्त सदैव कटिबद्ध रहने से। पांच जन्यकरः-पाँच जन्य शङ्ख आपके हाथ में है। रामो–सर्वान्तर्यामी होने से। त्रिरामी–मथुरा, वृन्दावन, गोकुल तीनों स्थानों में रमण करने से। वनजः-वन से उत्पत्ति होने से। जयः-सबको जीतने वाले हैं ॥ ४८ ॥

फाल्गुनः फाल्गुनसखो विराधवधकारकः।
रुक्मिणीप्राणनाथश्च३३०सत्यभामाप्रियङ्करः।४८

अर्थ—फाल्गुनः-अर्जुन रूप होने से। फाल्गुन सखः-फाल्गुन जो अर्जुन उसके सखा हैं। विराधवध कारकः-विराध को मारने वाले हैं। रुक्मिणी प्राण नाथः-रुक्मिणी के प्राणप्रिय पति हैं। सत्यभामा प्रियङ्करः-सत्य भामा के प्रिय कार्य पूर्ण करने से ॥ ४८ ॥

कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः।
अंकुशोभूसुरोभामोभामकोभ्रामको३४०हरिः।४९।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—कल्पवृक्षः-भक्तों की सम्पूर्ण अभिलाषाएँ पूर्ण करने से। महावृक्षः—संसार के सबसे बड़े वृक्ष रूप होने से। दानवृक्षः-वृक्षवत् फल दाता होने से। महाफलः-संसारी जीवों को मोक्ष रूप महाफल देने से। अंकुशः—वज्रांकुश आपका चिह्न होने से। भूसुरः-पृथ्वी के देवता हैं। भामः—सब के उत्पन्न कर्ता होने से। भ्रामकः-बहिर्मुख जीवों को नाना योनि में भ्रमण कराने से। भ्रामकः-अपनी माया से सारे संसार को नाच नचाते हैं। हरिः—भक्तों का मन तथा पाप को हरने वाले हो ॥४९॥

सरलःशाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः।
प्रद्युम्नोबलकर्ता च प्रहर्ता दैत्यहा३५०प्रभुः।५०।

अर्थ—सरलः—सरल भाव होने से। शाश्वतः—आप निरन्तर विद्यमान हैं। वीरः—सब में व्याप्त होने से। यदुवंशी-यदुवंश में पैदा होने से। शिवात्मकः-आपकी आत्मा कल्याण रूप है। प्रद्युम्नः-अत्यन्त प्रकाशमान होने से। बलकर्ता-गोवर्द्धन उठाने में बल किया था। प्रहर्ता-ध्यान करने वाले के क्लेश को हरने से। दैत्यहा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाधनो महावीरो वनमालाविभूषणः ।
तुलसीदामशोभाढ्यो जालन्धरविनाशनः ॥५१॥

अर्थ—महाधनः-महान् विभूति होने से। महावीरः-बड़े पराक्रमी होने से। वनमाला विभूषणः-वन माला ही से जिनकी शोभा है। तुलसी दाम शोभाढ्यः-तुलसी की माला जिनको अत्यन्त शोभा देती है। जालंधर विनाशनः-जालन्धर के नाश कर्ता होने से।५१।

शूरःसूर्योमृकण्डश्च भास्करो३६०विश्वपूजितः ।
रविस्तमोहा वह्निश्च वाडवो वडवानलः ॥ ५२ ॥

अर्थ—शूरः—पराक्रमी होने से। सूर्यः-सूर्यवत् प्रकाशित होने से। मृकण्डः भास्करः-संसार को प्रकाशित करने से। विश्व पूजितः-सारा संसार आपको पूजता है। रविः तमोहा—अज्ञानांधकार को दूर करने को सूर्य रूप हैं। वह्निः-भक्तों के मोक्ष दाता होने से। वाडवः-विप्र रूप होने से। बडवानलः-अग्नि रूप होने से ॥५२॥

दैत्यदर्पविनाशी च गरुडो गरुडाग्रजः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपीनाथो३७०महीनाथोवृन्दानाथोऽवरोधकः॥५३

अर्थ—दैत्य दर्प विनाशी-दैत्यों का घमण्ड नाश करने वाले हैं। गरुडः-स्वयम् गरुड़ भी हैं। गरुड़ाग्रजः-भ्राता रूप से गरुड़ के अग्रज हैं। गोपीनाथः-गोपियों के स्वामी हैं। महीनाथः-पृथ्वी के स्वामी हैं। वृन्दानाथः-वृन्दा के स्वामी हैं। अवरोधकः-भक्तों के कष्टों का नाश करते हैं॥ ५३॥

प्रपंची पंचरूपश्च लतागुल्मश्च गोपतिः।
गङ्गाचयमुनारूपो३८०गोदावेत्रवती तथा॥५४॥

अर्थ—प्रपञ्ची—जगत के विस्तार कर्ता हैं। पञ्चरूपः—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इनमें आपके रूप विद्यमान हैं। लता-वृक्षलता रूप होने से। गुल्मः-नवीन वृक्ष रूप होने से। गोपतिः-पृथ्वी, स्वर्ग, यज्ञ और वेद के पति हैं। गङ्गा—पुण्य प्रवाह रूप हैं। यमुना रूपः—यमुना आपकी परम प्यारी हैं। गोदा-सरिद रूप पुण्य प्रवाह होने से। वेत्रवती-पापियों के हेतु आपने वेत्र धारण किया था॥ ५४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कावेरी नर्वदा तापी गण्डकी सरयूस्तथा ।
राजसस्तामसः३६०सत्वीसर्वांगी सर्वलोचनः ॥५५॥

अर्थ—कावेरी, नर्मदा, तापी, गण्डकी सरयूः—इन सब नदियों के रूप में संसार में विद्यमान हैं। राजसः, तामसः, सत्वी-रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण इन तीनों गुणों से आप युक्त हैं। सर्वांगी-समस्त अङ्गों से पूर्ण हैं। सर्व लोचनः= प्राणीमात्र को देखते हैं ॥ ५५ ॥

सुधामयोऽमृतमयो योगिनी वल्लभः शिवः ।
बुद्धोबुद्धिमतांश्रेष्ठो विष्णुर्जिष्णुः४००शचीपतिः॥

अर्थ—सुधामयः, अमृतमयः-सुधामय तथा अमृतमय रूप होने से । योगिनी वल्लभः—चौंसठ योगिनियों के भी प्यारे हैं। शिवः—कल्याण रूप होने से । बुद्धः—प्रशस्त बुद्धि होने से । बुद्धि मतां श्रेष्ठः-बुद्धिमानों में सर्व श्रेष्ठ हैं। विष्णुः-सर्व व्यापक हैं। जिष्णुः-जयशील होने से । शची पतिः—इन्द्राणी के पति होने से ॥ ५६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंशी वंशोधरो लोकोविलोकोमोहनाशनः ।
रवरावोरवोरावो४१०बालोबाल बलाहकः ॥५७॥

अर्थ—वंशी—आपके पास वन्शी विद्यमान है । वन्शधरः-वन्शी धारण करने से । लोको विलोकः-समस्त संसार को कृपा पूर्वक देखते रहते हैं । मोहनाशनः—मोह का नाश करने वाले हैं । रवरावः-अपनी अपनी भाषा के अनुरूप उच्चारण करने से । रवः—सर्वज्ञ होने से । रावः—मल्हारादि राग रूप होने से । बालः-बाल रूप होने से । बाल बलाहकः-नवीन मेघ के समान जिनका वर्ण है ॥ ५७ ॥

शिवोरुद्रो नलो नीलो लांगुली लांगला श्रयः ।
पारदः४२०पावनो हंसोहंसारूढोजगत्पतिः ॥५८॥

अर्थ—शिवः-भक्तों के कल्याण करने से । रुद्रः—पापियों को नरक में डाल कर डराने से । नलो, नीलः-रामावतार के समय नल, नील के रूप से समुद्र का पुल बांधा था । लांगुली-समुद्र के उल्लंघन में हनूमानजी को अति बल देने से ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लांगलाश्रयः-हल धारण करने से । पारदः-संसार सागर से पार करने वाले । पावनः-अपने भक्तों को पवित्र करने वाले । हंसः-हंस की सी चाल चलने वाले । हंसारूढः-हंस पर सवारी करने वाले । जगत्पतिः-संसार के पति हैं ॥ ५८ ॥

मोहिनीमोहनो मायी महामायो महामखी ।
वृषोवृषाकपिः४३०कालःकालीदमनकारकः ।५९।

अर्थ—मोहिनी मोहनः-मोहिनी छवि भी जिनके रूप को देख कर मोहित हो जाती है । मायी—जगत को बस में रखने से । महामायाः-जिनकी माया विशाल है । महामखी-बड़े बड़े यज्ञ करने वाले । वृषः-भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले । वृषा कपिः-धर्म की वर्षा के हेतु असुरों को जीतकर पृथ्वी लाये । कालः-काल स्वरूप होने से । काली दमन कारकः-काली का घमण्ड नाश करने से ॥ ५९ ॥

कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः ।
कोमलो वारुणो राजा जलजो जलधारकः ॥६०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—कुब्जा भाग्य प्रदः-कुब्जा का सौभाग्य बढ़ाने से। वीरः-विक्रमशाली होने से। रजक क्षयकारकः-कंस के धोबी को मारने से। कोमलः—मधुर मूर्ति धारण करने से। वारुणः-वरुण रूप होने से। राजा-अपनी असाधारण शोभा से शोभते हैं। जलजः-मत्स्य रूप धारण करने से। जलधारकः-शिवजी के रूप में गङ्गाजी को अपने मस्तक पर धारण करने से ॥ ६० ॥

४४०हारकः सर्वपापघ्नः परमेष्ठी पितामहः ।
खड्गधारी कृपाकारी राधारमण सुन्दरः ॥ ६१ ॥

अर्थ—हारकः-तीनों पापों के हरने से। सर्व पापघ्नः-संपूर्ण पापों का नाश करने से। परमेष्ठी-बैकुण्ठ लोक में रहने से। पितामहः-संसार के पितामह स्वरूप होने से। खंगधारी-नन्दक खंग के धारण करने से। कृपाकारी-दीनों पर कृपा करने से। राधा रमण सुन्दरः-राधिकाजी के संग रमण करने में अति निपुण होने से ॥ ६१ ॥

द्वादशारण्यसंभोगी शेषनाग फणालय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामःश्यामःसुखःश्रीदःश्रीपतिःश्रीनिधिःकृतिः ६२

अर्थ—द्वादशारण्य सम्भोगी—भद्रवन आदि बारह वनों में आपने गुप्त लीला की है। शेषनाग फणालयः—शेषनाग का फण आपका विश्राम स्थान है। कामः—अत्यन्त कमनीय हैं। श्यामः-श्याम वर्ण होने से। सुखः श्रीदः—सुख तथा धन के देने वाले हैं। श्रीपतिः-लक्ष्मी के पति हैं। श्रीनिधिः—लक्ष्मी के भण्डार हैं। कृतिः—सब कार्य करने में कुशल हैं॥ ६२॥

हरिर्हरो नरो नारो नरोत्तमः४६० इषुप्रियः।
गोपालीचित्तहर्ता च कर्ता संसारतारकः॥ ६३॥

अर्थ—हरिः—दुष्टों का नाश करने से। हरः—शंकर स्वरूप होने से। नरः—प्राणी मात्र में निवास करने से। नरोत्तमः—मनुष्यों में उत्तम होने से। इषुप्रियः—बाण विद्या अधिक प्रिय होने से। गोपाली चित्त हर्त्ता—गोपियों का चित्र हरण करने से। कर्त्ता—सब के आदि भूत कारण होने से। संसार तारकः-संसार से भक्तों का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उद्धार करते हैं ॥ ६३ ॥

आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः ।
साधुर्मधु४७०र्विधुर्धाता भ्राताऽक्रूरपरायण ।६४।

अर्थ---आदि देवः-आप ही सब देवों के आदि हैं। महादेवः--आप देवताओं के भी देवता हैं। गौरी गुरुः-शिवजी के रूप में पार्वती के पति होने से। अनाश्रयः--आपका और कोई आश्रय नहीं, आप ही सबके आश्रय हो। साधुः-भक्तों के अभीष्टों को साधने से। मधुः--लक्ष्मी के धारण करने से। विधुः-चन्द रूप होकर संसार में शीतल प्रकाश करने से। धाताः--विश्व का भरण पोषण करने से। भ्राता--सब को अपना जान कर रक्षा करते हैं। अक्रूर परायणः--अक्रूर के एक मात्र आधार होने से ॥ ६४ ॥

रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः ।
वनंवनी४८०वनाध्यक्षोमहावन्द्योमहामुनिः ।६५।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—रोलम्बी-भ्रमर से आपके केश हैं। हयग्रीवः—मधु कैटभ के मारने से। वानरारि—बलभद्र रूप करके द्विविद बन्दर को मारने से। वनाश्रयः-वृन्दावन आपका स्थान है। वनम्—वृन्दावन रूप होने से। वनी-वन में विहार करने से। वनाध्यक्षः—वनों के अध्यक्ष होने से। महावन्द्यः—अपनी प्रतिज्ञा में बंधे रहने से। महामुनिः—व्यास रूप होने से॥ ६५॥

स्यमन्तकमणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः।
गोवर्द्धनो वर्द्धनीयो वर्द्धनी वर्द्धनप्रियः ॥६६॥

अर्थ—स्यमन्तक मणि प्राज्ञः—स्यमन्तक मणि के प्रभाव को जानने से। विज्ञः—सबको जानने से। विघ्न विघातकः—सम्पूर्ण विघ्नों को नष्ट करने वाले हैं। गोवर्द्धनः-भार को उतारकर भूमि को बढ़ाने से। वर्द्धनीयः-सम्पूर्ण आपकी सेवा करें अतएव वर्द्धनशील होने से। वर्द्धनी वर्द्धन प्रियः-सम्पत्तियों का बढ़ाना आपको प्रिय है॥६६॥

वर्द्धन्यो४९०वर्द्धनोवर्द्धी वार्द्धिन्यःसुमुखप्रियः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वर्द्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारकजनप्रियः ॥६७॥

अर्थ—वर्द्धन्यः—सब से पूजने के योग्य होने से। वर्द्धनः—जगत का विस्तार करने से। वर्द्धीः-वामन रूप धारण करके आपने फिर अपना देह बढ़ाया। वर्द्धिन्य—सबकी वृद्धि में ही लगे रहने से। सुमुख प्रियः—आपका सुन्दर मुख सबको प्रिय लगता है। वर्द्धितः—यशोदा के स्तनपान से आप बढ़े। वृद्धकः—ज्ञान वृद्ध होने से। वृद्धः—ब्रह्मादिकों के भी पिता होने से। वृन्दारकजन प्रियः-देवताओं के प्रिय होने से ॥ ६७ ॥

गोपालरमणीभर्ता साम्बकुष्ठविनाशनः ५०० ।
रुक्मिणीहरणः प्रेम प्रेमी चंद्रावलीपतिः ॥६८॥

अर्थ—गोपाल रमणी भर्ता—गोपियों के पालन पोषण करने वाले। साम्बकुष्ठ विनाशनः—साम्बकुष्ठ के विनाश कर्ता होने से। रुक्मिणी हरण प्रेमः—रुक्मिणी हरण में आपकी प्रीति है। प्रेमी—भक्तों में आपकी प्रीति है। चन्द्रावली पतिः -चन्द्रावली के रक्षक हैं ॥ ६८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकर्ताविश्वभर्ता च नरो नारायणो बली।
गणोगणपति५१०श्चैवदत्तात्रेयोमहामुनिः ॥६९॥

अर्थ—श्रीकर्ता-संपत्ति के कर्ता होने से। विश्वभर्ताः-विश्व का पालन पोषण करने वाले। नरः—मनुष्य रूप होने से। नारायणः-सर्वान्तरयामी होने से। बलीः—बड़े शक्तिशाली हैं। गणः—सब समूहों में आपकी गिनती है। गणपतिः—समूहों के पति होने से। दत्तात्रेयः-सन्यासाश्रम प्रवर्तक होने से। महामुनिः-मुनि श्रेष्ठ होने से।६९।

व्यासो नारायणो दिव्यो भव्यो भावुकधारकः।
श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं५२०भावुकंभविकंशुभम्।७०।

अर्थ—व्यासः—व्यासावतार धारण करने से। नारायणः-जल में निवास स्थान होने से। दिव्यः—स्वर्ग में विचरने वाले। भव्यः—अति सुन्दर होने से। भावुक धारकः—मन्वादि रूप करके कर्म की व्यवस्था स्थापन करने से। श्वः-स्वर्ग अपवर्ग रूप होने से। श्रेयसं-मङ्गल मय होने से। शिवम्—मोक्ष और सुख स्वरूप होने से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भद्रं-मङ्गल स्वरूप होने से। भावुकं-सब को उत्पन्न करने से। भविकं-सब आप से उत्पन्न होते हैं। शुभम्-आप ही सबके शुभ कर्ता हैं॥ ७०॥

शुभात्मकः शुभः शास्ता प्रशास्ता मेघनादहा।
ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः ॥७१॥

अर्थ—शुभात्मकः—आपकी आत्मा मंगलकारी है। शुभः—शुभ स्वरूप होने से। शास्ता-शास्त्र द्वारा सब के शिक्षक होने से। प्रशास्ता—सब से स्तुति करने के योग्य हैं। मेघनादहा—लक्ष्मण रूप द्वारा मेघनाद को मारने से। ब्रह्मण्यदेवः-ब्राह्मणों के हितकारी आप देव हैं। दीनानामुद्धार करणक्षमः—दीनों का उद्धार करने के योग्य हैं तथा श्रम रहित हैं॥ ७१॥

५३० कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः।
कृष्णः कामी सदा कृष्णः समस्त प्रियकारकः॥७२॥

अर्थ—कृष्णः—परब्रह्म सबके आधार होने से। कमल पत्राक्षः—कमल से शीतल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नेत्र होने से । कृष्णः-भक्तों का पाप नाश करने से। कमल लोचनः-शीतल कमल सदृश नेत्र होने से । कृष्णः-श्याम वर्ण होने से । कामी-सबकी अभिलाषाओं को पूर्ण करने से । सदा कृष्णः-सदा कृष्ण रूप रहने से । समस्त प्रिय कारकः-सबको प्रिय करने से ॥ ७२ ॥

नंदो नंदी५४० महानंदी मादी मादनकः किली ।
मिलीहिलीगिलीगोलीगोलोगोलालयोगुली ॥७३॥

अर्थ-–नन्दः–संसार में शुभ के बढ़ाने से । नन्दी-आनन्द मय होने से । महानन्दी--अत्यन्त आनन्दमय होने से । मादी–असज्जनों को विद्या धन कीर्ति से मद कराते हो, और स्वजनों को हर्ष कराते हो। मादनकः-इस वाक्य से आपका गान किया जाता है। किला–विश्व सर्ग विसर्ग में आप क्रीडा करें। मिली-गोप वधू और भक्त जन से मिलते हो। हिली-गोपियों के संग नृत्य करने का शील है। गिली-गोपियों के दिये हुए नवनीत आदि भोजन करने से । गोली-गोप बालाओं के संग में क्रीडा करने से। गोलः–गोपाल वेश धारण करने से। गोलालयः-गो लोक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में निवास करने से। गुली-अपने भक्तजन की रक्षा करने से ॥ ७३ ॥

गुग्गुली मारकी शाखी वटःपिप्पलकः कृती।
म्लेच्छहाकालहर्ता च यशोदायश एव च५६०॥७४

अर्थ—गुग्गुलीः-गुग्गुल आपके सूंघने के हेतु अति प्रिय है। मारकी-कामदेव के मारने वाले हैं। शाखी-वेद रूप शाखा होने से। वटः—अपनी शक्ति में सबको लपेटे रहने से। पिप्पलकः--वृक्षों में पीपल आपकी विभूति है। कृती-सर्व यज्ञादिकों के करने से। म्लेच्छहा-म्लेच्छों के नाश कर्ता कल्क्यावतार हो। काल हर्ता-काल के नाश कर्ता होने से। यशोदायशः--यशोदा के सौभाग्य रूप होने से ॥ ७४ ॥

अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः।
हंसो नारायणोलीलोनीलो५७० भक्तिपरायणः ७५

अर्थ—अच्युतः-उत्पत्यादि विकार रहित होने से। केशवः-सूर्यादि संक्रान्तों के अंश विद्यमान होने से। विष्णुः-प्रलय काल में अलग अलग करने से। हरिः-भक्तों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के पाप हरने से। सत्यः—सत्य प्रतिज्ञ होने से। जनार्दनः—भक्तों को प्रसन्न करने से। हंसः—मुक्ति आप से प्राप्त हो सकती है। नारायणः—जीव समूहों के प्रवर्तक होने से। लीलः-लीलामय होने से। नीलः—श्याम शरीर होने से। भक्ति परायणः-केवल भक्ति ही आपकी प्राप्ति का साधन है॥ ७५॥

जानकी वल्लभो रामो विरामो विघ्ननाशनः।
सहस्रांशुर्महाभानु वीरबाहुर्महोदधिः॥ ७६॥

अर्थ—जानकी वल्लभः—सीताजी के प्राणप्रिय होने से। रामः-सब के भीतर रमण करने से। विरामः—सब चराचर के आप अवधि रूप हैं। विघ्ननाशनः—सब विघ्नों को नाश करने वाले हैं। सहस्रांशु--सूर्य रूप में संसार को प्रकाशित करने से। महाभानुः—अत्यन्त प्रकाशमान होने से, अथवा सूर्य के सदृश गर्मी पहुँचाने से। वीर वाहुः--भुजाओं में अपरमित बल होने से। महोदधिः—जल को धारण करने से॥ ७६॥

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारःसरित्पतिः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुलानंदकारी च प्रतिज्ञापरिपालकः ॥७७॥

अर्थ—समुद्रः—लक्ष्मी सहित शोभायमान होने से। अब्धिः—श्रुति कहती है तालाबों में समुद्र हूँ इस कारण आप सागर रूप हैं। अकूपारः—कूर्मावतार धारण करने से। पारावारः—जगत में आप व्यापक है। सरित्पतिः—समुद्र रूप नदियों के पति होने से। गोकुलानन्दकारी—गौओं को आनन्द देने से। प्रतिज्ञा परिपालकः—अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने वाले हैं॥ ७७॥

सदारामःकृपारामो महारामो धनुर्धरः ५९० ।
पर्वतः पर्वताकारो गयोगेयो द्विजप्रियः ॥७८॥

अर्थ—सदारामः—साधुओं के विश्राम स्थान होने से। कृपारामः—भक्तों के हृदय में कृपा पूवक रमण करने से। महारामः—भक्तों के मन के विहार करने के लिए आप आराम स्थल हैं। धनुर्धरः—धनुष धारी होने से। पर्वतः—पूर्ण रूप होने से, अथवा सब जगह जाने से। पर्वताकारः—गोवर्द्धन रूप होने से। गयः—भक्तों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गायन स्थान में सदा विद्यमान रहने से। गेय:—गाने के योग्य होने से। द्विज प्रिय:- द्विज आपको प्रिय हैं ॥ ७८ ॥

कम्बलाश्वतरो रामो रामायण प्रवर्तकः ।
द्यौर्दिवो६००दिवसोदिव्योभव्योभाविभयापहः ७६

अर्थ—कम्बलाश्वतर:—कामनीय उच्चश्रवा घ का है। राम:—कर्म फल के देने हारे तथा सर्वज्ञ होने से। रामायण प्रवर्तक:—बालमीक द्वारा रामायण के प्रवर्तक होने से। द्यौ—आकाश की तरह सब जगह व्यापक होने से। दिव:—आकाश आप से उत्पन्न है। दिवस:—सबके प्रकाशक होने से। दिव्य:—सब से स्तुति के योग्य हो। भव्य:—सदा एक रस रहने से। भाविभयापह:—भक्तों के सांसारिक भय के दूर करने से ॥ ७६ ॥

पार्वतीभाग्यसहितो भ्राता लक्ष्मीविलासवान् ।
विलासीसाहसीसर्वो६१०गर्वीगर्वितलोचनः ॥८०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—पार्वती भाग्य सहितः--पार्वती के सौभाग्य सहित हो। आता--सबके बन्धु स्वरूप होने से। लक्ष्मी विलासवान्-लक्ष्मी के संग विलास करते हो। विलासी-अत्यन्त विलास प्रिय होने से। साहसी-साहसी होने से। सर्वी-वस्तु मात्र आपकी है। गर्वी-स्वाभिमानी होने से। गर्वित लोचनः-आपकी आँखें गर्वित हैं॥ ८०॥

मुरारिर्लोकधर्मज्ञो जीवनोजीवनांतकः।
यमोयमादिर्यमनोयामी६२०यामविधायकः।८१।

अर्थ—मुरारिः-मुर नाम राक्षस के वैरी होने से। लोक धर्मज्ञः-वर्णाश्रम धर्म के ज्ञाता होने से। जीवनः-सम्पूर्ण लोक के जीवनाधार होने से। जीवनान्तकः—काल स्वरूप होकर जीवों के प्राण का अन्त करते हो। यमः--यम रूप होने से। यमादिः-यम के भी विधाता होने से। यमनः-भक्तों को आप सब कृत्यों से उदासीनता द्वारा उपराम कराते हो। यामी—उपराम आपका है। याम विधायकः-भक्तों में उपराम विधान करने से॥ ८१॥

वंसुली पांसुली पांसुः पाण्डुरर्जुनवल्लभः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ललिताचन्द्रिकामाली मालीमालाम्बुजाश्रयः ।८२।

अर्थ—वंसुली:-वेणु के बजाने से । पांसुली-आप के सुन्दर रूप को देख कर साध्वी का चित्त भी चलायमान हो जाता है। पांसुः-भक्त विरोधियों का नाश करने से । पांडुः-सर्वज्ञ होने से । अर्जुन वल्लभः-अर्जुन के मित्र होने से । ललिता चन्द्रिका माली—भक्तों को आनन्द देने वाली वैजयन्ती माला धारण करने से । माली-अत्यन्त शोभायमान होने से । मालांबुजाश्रयः-कमल से ग्रथित माला धारण करने से ॥ ८२ ॥

अम्बुजाक्षो ६३० महायक्षो दक्षश्चिंतामणिःप्रभुः ।
मणिर्दिनमणिश्चैव केदारो बदरीश्रयः ॥ ८३ ॥

अर्थ—अम्बुजाक्षः-कमलवत् नेत्र होने से । महायक्षः-सर्व पूज्य होने से । दक्षः-विश्व के वर्द्धन और नाश करने से । चिन्तामणिः-भक्तों के मनोरथ पूरे करने से । प्रभुः-सबके अधिपति होने से । मणिः-सबसे श्रेष्ठ होने से । दिन मणिः-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूर्य की तरह सबको प्रकाशमान् करने से । केदारः-समुद्र में शंखासुर के नाश करने से । बदरीश्रयः-बद्रिकाश्रम में निवास करने से ॥ ८३ ॥

बदरीवनसंप्रीतो व्यासः सत्यवतीसुतः ६४० ।
अमरारिनिहंता च सुधासिन्धुविधूदयः ॥८४॥

अर्थ—बदरीवन संप्रीतः-बदरी बन में आपकी पूर्ण प्रीति होने से । व्यासः-वेद के विभाग करने से । सत्यवतीसुतः-सत्यवती के पुत्र होने से । अमरारि निहन्ता-देवताओं के बैरी राक्षसों को मारने से । सुधासिंधुविधूदयः-सुधा सिंधु में चंद्रवत् उदय होने से और सबको आनंद देने से ॥ ८४ ॥

चन्द्रोरविः शिवः शूली चक्री चैव गदाधरः ।
श्रीकर्ता श्रीपतिः ६५० श्रीदः श्रीदेवोदेवकीसुतः ।८५।

अर्थ—चंद्रः-जगत को प्रसन्न करने से । रविः-वेदध्वनि करने से । शिवः-मङ्गल मूर्ति होने से । शूली-असुरों को दुःख देने से । चक्रीः-सुदर्शन चक्र धारण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करने से। गदाधरः-गदा धारण करने से। श्रीकर्ता-भक्तों को मोक्ष संपदा देने वाले हो। श्रीपतिः-लक्ष्मीजी के पति हैं। श्रीदः--सुख सौभाग्य के दाता होने से। श्रीदेवः-लक्ष्मीजी के भो पूज्य होने से। देवकी सुतः-देवकी के पुत्र होने से ॥ ८५ ॥

श्रीपतिःपुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः।
वासुदेवोऽप्रमेयात्माकेशवो६६० गरुड़ध्वजः ।८६।

अर्थ—श्रीपतिः-लक्ष्मी द्वारा जगत की रक्षा करने से। पुण्डरीकाक्षः-कमल रूप हृदय में व्यापक होने से। पद्मनाभः—आपकी नाभि में पद्म है। जगत्पतिः-जगत के रक्षक होने से। वासुदेवः-सम्पूर्ण विश्व में क्रीडा करने से। अप्रमेयात्मा-अनन्त मूर्ति होने से। केशवः-ब्रह्मा रुद्र सब आपके वश में हैं। गरुड़ध्वजः-गरुड़ आपका वाहन है ॥ ८६ ॥

नारायणः परंधाम देव देवो महेश्वरः।
चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्योदयानिधिः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ---नारायणः-जीव समूहों को साक्षात् देखने से । परंधाम--ज्योतिर्मय आपका सर्वोत्कृष्ट धाम है । देव देवः-देवता भी आपकी स्तुति करते हैं । महेश्वरः-सब के प्रभु होने से । चक्र पाणिः-हाथ में सुदर्शन चक्र रखते हैं । कलापूर्णः-षोडश कला परिपूर्ण होने से । वेद वेद्यः--वेद से जाने जाते हो । दयानिधिः--दया के समुद्र होने से ॥ ८७ ॥

भगवान्९७०सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः ।
अनन्तोनिर्गुणोऽनन्तोनिर्विकल्पो निरंजनः ।८८।

अर्थ---भगवान्--षडैश्वर्य सम्पन्न होने से । सर्व भूतेशः--सम्पूर्ण प्राणियों के ईश्वर होने से । गोपालः--गौ पृथ्वी आदि सबका पालन करते हो । सर्व पालकः-सब के पालने वाले हो । अनन्तः--आपका कोई अन्त नहीं पा सकता है । निर्गुणः-प्राकृत गुणों से रहित हो । अनंतः-आपकी महिमा का कोई भेद नहीं पा सकता । निर्विकल्पः-आप सब संकल्प विकल्प से रहित हैं । निरंजनः-निर्विकार रूप होने से ।

निराधारोनिराकारो९८०निराभासोनिराश्रयः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः ॥ ८९ ॥

अर्थ—निराधारः-आपके सिवाय जगतका और कोई आधार नहीं है । निराकारः-प्राकृत आकार से शून्य हो । निराभास.-आप स्वयम् प्रकाशमान हो अतएव आपको और के प्रकाश की कुछ आवश्यकता नहीं है । निराश्रयः—कार्य और कारण आप स्वयम् हो और की अपेक्षा नहीं रखते हो । पुरुषः-संहार काल में भुवनों का नाश करने से । प्रणवातीतः-प्रणव जो ॐ उससे प्रति पाद्य हो । मुकुन्दः-भक्तों को मुक्ति रस देने से । परमेश्वरः-प्रकृष्ट लक्ष्मी के ईश्वर होने से ॥ ८९ ॥

क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुण्ठोभक्तवत्सलः ९९०॥
विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः ॥९०॥

अर्थ—क्षणावनिः-धर्म की ग्लानि होने पर आप प्रकाश करते हैं । सार्व भौमः-सम्पूर्ण पृथ्वी के एक मात्र ईश्वर होने से । वैकुण्ठः-आपका कभी भी नाश नहीं है। भक्तवत्सलः-अपने भक्तों पर सदैव दया रखते हैं । विष्णुः—चराचर में व्यापक होने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से। दामोदरः-यशोदा ने आपके उदर में रस्सी बांधी थी। कृष्णः-श्याम स्वरूप होने से। माधवः-मा जो विद्या उसके पति होने से। मथुरा पतिः-मथुरा के रक्षक होने से।

देवकीगर्भसंभूतोयशोदावत्सलो हरिः।
शिवःसंकर्षणः७००शंभुर्भूतनाथोदिवस्पतिः।६१।

अर्थ—देवकी गर्भ संभूतः-देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने से। यशोदा वत्सलः-यशोदा के प्यारे पुत्र होने से। हरिः-दुष्टों का नाश करते हैं। शिवः-प्रलय में आप सब को शयन कराते हो। संकर्षणः-संहार काल में प्रजा को अपने बीच में खैंच लेने से। शम्भुः-लोगों को आप से सुख प्राप्त होता है। भूतनाथः-सम्पूर्ण प्राणियों के स्वामी होने से। दिवस्पतिः-स्वर्गाधीश होने से ॥ ६१ ॥

अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलो निरुपद्रवः।
निर्वाणनायकोनित्योनीलजी७१०मूतसंनिभः।६२।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—अव्ययः-त्रिकाल में नाशादि विकार करके रहित होने से। सर्व धर्मज्ञः-सम्पूर्ण धर्मों के जानने से। निर्मलः-मलिन गणिका, गज, गृध्र इत्यादि के निर्मल करने से। निरुपद्रवः-भक्तों को निरुपद्रव करने से। निर्वाण नायकः मोक्ष दाता होने से। नित्यः-ध्रुव होने से। नीलजीमूतसन्निभः-नील मेघवत् श्याम होने से॥ ६२॥

कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमलारूप तत्परः।
हृषीकेशः पीतावासा वसुदेव प्रियात्मजः॥६३॥

अर्थ—कलाक्षयः-कला के निवास भूत होने से। सर्वज्ञः-सब को जानने से। कमला रूप तत्परः-लक्ष्मी की शोभापर मुग्ध होने से। हृषीकेशः-इन्द्रियों के नियन्ता अथवा प्रवर्तक होने से। पीतवासः-पीले वस्त्र धारण करने से। वसुदेव प्रियात्मजः-वसुदेव जी के प्यारे पुत्र होने से॥ ६३॥

नन्द गोपकुमारार्यो नवनीताशनः प्रभुः।
पुराणपुरुषः७२०श्रेष्ठः शंखपाणिः सुविक्रमः॥६४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—नन्द गोपकुमारार्यः-नन्द गोप के श्रेष्ठ कुमार होने से। नवनीताशनः-माखन का भोग लगाने से। प्रभुः-सारे संसार के स्वामी होने से। पुराण पुरुषः-आदि से ही भक्तों के बहुत से पापों को नष्ट कर देते हैं। श्रेष्ठः-सर्वोत्तम होने से शंखपाणिः-शंख हाथ में धारण करने से। सुविक्रमः-पराक्रमी होने से ॥ ६४ ॥

अनिरुद्धश्चक्ररथः शार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः।
गदाधरःसुरार्तिघ्नोगोविंदो७३०नंदकायुधः ॥६५॥

अर्थ—अनिरुद्धः-आपकी सर्वत्र गति है। चक्ररथः-काल चक्र, जगचक्र, युग चक्र से आप रमण करते हो। शार्ङ्गपाणिः-शार्ङ्ग धनुष के धारण करने से। चतुर्भुजः—चार भुजा रखने से। गदाधरः—भक्तों की रक्षा और असुरों का संहार करने से। सुरार्तिघ्नः-देवताओं के दुख दूरकरने से। गोविन्दः-उपनिषद द्वारा सज्जनों को अपना स्वरूप बताने से। नन्द का युधः-नन्द खड्ग आपका आयुध है ॥ ६५ ॥

वृन्दावनचरः शौरिर्वेणुवाद्य विशारदः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृणावर्तान्तको भीमसाहसो बहुविक्रमः ॥६६॥

अर्थ—वृन्दावनचरः-वृन्दावन में विहार करने से। शौरिः-सुरकुल में उत्पन्न होने से। वेणुवाद्य विशारदः-वेणु के गान में कुशल होने से। तृणावर्तान्तकः-तृणावर्त का नाश करने से। भीमः-शत्रुओं के लिये काल रूप होने से। साहसः—अत्यन्त साहसी होने से।। बहु विक्रमः-बहुत पराक्रमी होने से ॥ ६६ ॥

शकटासुर संहारी बकासुर विनाशनः।
धेनुकासुरसंघातः७४० पूतनारिर्नृकेसिरी ॥६७॥

अर्थ—शंकटासुर संहारी-शकटासुर के मारने से। बकासुर विनाशनः—बकासुर का बध करने से। धेनुकासुर संहारीः—धेनुकासुर के बध करने से। पूतनारिः-पूतना के प्राण लेने से। नृकेसिरी—नृसिंह अवतार धारण करने से॥ ६७ ॥

पितामहोगुरुः साक्षी प्रत्यगात्मासदाशिवः।
अप्रमेयप्रभुःप्राज्ञोप्रतर्क्यःस्वप्नवर्द्धनः७५०॥६८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—पितामहः-ब्रह्मादिक के भी पूज्य होने से। गुरुः-अज्ञानांधकार को रोकने से। साक्षी-साक्षात् सबको देखने से। प्रत्यगात्मा-प्राणियों के सर्वान्तर्यामी होने से। सदा शिवः-सब देश, काल में भक्तों को मंगल देने से। अप्रमेयः-आपका कोई परिमाण (नाप) नहीं है। प्रभुः-प्रकर्ष करके वर्तने से। प्राज्ञः-आपकी आज्ञा दृढ है। अप्रतर्क्यः- अगोचर होने से आप तर्क करने में नहीं आते हो। स्वप्नवर्द्धनः-स्वप्न के बढाने से ॥ ९८ ॥

धन्योमान्योभवोभावोधीरःशांतोजगद्गुरुः
अन्तर्यामीश्वरोदिव्यो७९०दैवज्ञोदेवतागुरुः॥९९॥

अर्थ— धन्यः-स्वयम् कृतार्थ रूप होने से। मान्यः-सब के पूजनीय हो। भवः-सम्पूर्ण जगत के पैदा करने से। भावः-सत्तात्मक होने से। धीरः-धैर्यवान् होने से। शान्तः-सहनशील होने से। जगद्गुरुः-लोक पूजनीय होने से। अन्तर्यामी-सब के भीतर बाहर का वृत्तान्त जानने से। ईश्वरः-सब के ईश्वर होने से। दिव्यः-दिव्य स्वरूप होने से। दैवज्ञः—होनहार बातों को जानने से। देवता गुरुः-देवताओं के भी गुरु होने से ॥ ९९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षीराब्धिशयनोधाताल्क्ष्मीवांल्लक्ष्मणाग्रजः ।
धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखर पूजितः ॥१००॥

अर्थ—क्षीराब्धिशयनः-क्षीर समुद्र में शयन करने से । धाता-अनन्त रूप से विश्वको धारण करने से । लक्ष्मीवान्-लक्ष्मी नित्य आपके वक्षःस्थल में निवास करती हैं । लक्ष्मणाग्रजः-लक्ष्मण के बड़े भ्राता होने से । धात्रीपतिः-पृथ्वी के पति होने से । अमेयात्मा-आपकी महिमा का कुछ पार नहीं है । चन्द्रशेखर पूजितः-शिवजी आपकी पूजा करते हैं ॥ १०० ॥

लोकसाक्षी७७०जगच्चक्षुःपुण्यचारित्रकीर्तनः ।
कोटिमन्मथसौन्दर्यो जगन्मोहन विग्रहः ॥१०१॥

अर्थ—लोकसाक्षी-जगत के साक्षी रूप होने से । जगच्चक्षुः-जगत को नेत्रों की तरह अति प्रिय होने से । पुण्य चारित्र कीर्तनः-आपके चरित्र तथा कीर्तन पुण्य रूप हैं । कोटिमन्मथ सौन्दर्यः-कोटि कामदेव के समान सौन्दर्य होने से ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगन्मोहन विग्रहः—जगत के मोह की शक्ति धारण करने से ॥ १०१ ॥

मन्दस्मिततमो गोपो गोपिका परिवेष्टितः।
फुल्लार विन्दनयनश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥१०२॥

अर्थ—मन्दस्मिततमः—मन्द २ मुसकान करने से। गोपः गोपिका परिवेष्टितः—गोप यानी जीव और गोपी यानी प्रकृति इन से घिरे रहने से। फुल्लार विन्द नयनः—विकसित कमल से नेत्र हैं। चाणूरांध्रनिषूदनः—चाणूर सरी के मदान्ध दुष्टों को मारने से ॥ १०२ ॥

इन्दी वरदलश्यामो ७८० बर्हिबर्हावतंसकः।
मुरली निनदाह्लादोदिव्यमाल्याम्बराश्रयः॥१०३॥

अर्थ—इन्दीवर दल श्यामः—नील कमलवत् श्याम होने से। बर्हि बर्हावतंसकः-मोर के पंख तथा मुकुट धारण करने से। मुरली निनदाल्हादः—मुरली के शब्द से आन्हादित करते हो। दिव्य माल्याम्बराश्रयः—दिव्य माला और वस्त्रों से शोभित हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुकपोलयुगः सुभ्रू युगलः सुललाटकः ।
कम्बुग्रीवो विशालाक्षोलक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ७१० ।

अर्थ—सुकपोलयुगः-आपके दोनों कपोल अति सुन्दर हैं । सुभ्रू युगलः-आपकी दोनों भ्रकुटी अति सुन्दर हैं । सुललाटकः-आपका ललाट सुन्दर तथा ऊँचा है । कम्बुग्रीवः-शंख की सी त्रिवली युक्त ग्रीवा है । विशालाक्षः-विशाल नेत्र होने से । लक्ष्मीवान्-लक्ष्मी के पति होने से । शुभलक्षणः-सब शुभ लक्षणों से युक्त हैं ॥१०४॥

पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः ।
कलंकरहितः शुद्धो दुष्टशत्रुनिबर्हणः ॥ १०५ ॥

अर्थ—पीनवक्षाः-आपका वक्षःस्थल पुष्ट (चौड़ी छाती) है। चतुर्बाहुः-चारों वेद आपकी भुजा हैं । चतुर्मूर्तिः-राम, कृष्ण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध यह चारों आपकी मूर्ति हैं। त्रिविक्रमः-तीनों पद से आपने पृथ्वी नापी, अथवा आपका पराक्रम तीनों लोक में विद्यमान है । कलंक रहितः-अच्युत वीर्य होने से आप निष्कलंक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं। शुद्धः-निर्विकार होने से। दुष्ट शत्रु निवर्हणः-गौ, विप्र, देवता आदि को सताने वाले दुष्ट शत्रुओं के आप नाशक हैं ॥ १०५ ॥

किरीट कुण्डलधरः कटकाङ्गदमण्डितः।
मुद्रिकाभरणोपेतः८००कटिसूत्रविराजितः ॥१०६॥

अर्थ—किरीट कुण्डलधरः-मुकुट और कुण्डल के धारण करने से। कटकांगदमण्डितः-किंकिणी और भुज बन्द से भूषित होने से। मुद्रिका भरणोपेतः-अंगूठी धारण करने से। कटि सूत्र विराजितः—कमर में करधनी धारण करने से। १०६।

मञ्जीर रञ्जितपदः सर्वाभरण भूषितः।
विन्यस्त पादयुगलो दिव्यमंगल विग्रहः ॥१०७॥

अर्थ—मञ्जीर रंजित पदः—पाँवों में पैजनियाँ धारण करने से। सर्वाभरण भूषितः—सम्पूर्ण आभूषणों से भूषित होने से। विन्यस्तपाद युगलः-रास में आपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नृत्य युक्त चरण रक्खे। दिव्य मंगल विग्रहः-प्राकृत मंगल रूप आपका शरीर है।

गोपिकानयनानन्दः पूर्णचन्द्र निभाननः।
समस्तजगदानंदःसुन्दरोलोकनंदनः८१०॥१०८॥

अर्थ—गोपिका नयना नन्दः-गोपियों के नेत्रों को आनन्द देने से। पूर्ण चन्द्र निभाननः—आपका मुख पूर्ण चन्द्रवत है। समस्त जगदानन्दः—समस्त जगत के आनंद दाता होने से। सुन्दरः-शुभ वेष धारण करने से। लोक नंदनः—लोकों को समृद्धि युक्त करने से॥ १०८॥

यमुनातीर संचारी राधा मन्मथवैभवः।
गोपनारीप्रियोदान्तो गोपी वस्त्रापहारकः॥१०९॥

अर्थ—यमुनातीर सञ्चारी—यमुना के तट पर विहार करने से। राधा मन्मथ वैभवः—राधा में ही आपकी काम सम्पदा है। गोप नारी प्रियः—गोपों की स्त्रियों को प्यारे हो। दांतः—जितेन्द्रिय होने से। गोपी वस्त्रापहारकः—गोपियों के वस्त्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चुराने से ॥ १०६ ॥

श्रृङ्गारमूर्तिःश्रीधामा तारको मूलकारणम्।
सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभंजनः॥११०॥

अर्थ—श्रृङ्गार मूर्तिः-श्रृंगार की साक्षात् मूर्ति होने से। श्रीधामा—शोभा के स्थल होने से। तारकः-संसारी मनुष्यों को अनेक पापों से पार लगाते हो। मूल कारणम्—सब जगत के मूल कारण होने से। सृष्टि संरक्षणो पायः-आपका स्मरण ही सृष्टि की रक्षा का एक मात्र उपाय है। क्रूरासुर विभंजनः-दुष्ट राक्षसों का नाश करते हो॥ १० ॥

नरकासुर संहारी च मुरारिर्वैरि मर्दनः।
आदितेयप्रियो दैत्यभीकरश्चेन्दुशेखरः ॥१११॥

अर्थ—नरका सुर संहारी—नरकासुर को मारने से। मुरारिः-मुर नाम राक्षस के वैरी होने से। वैरिमर्दनः—भक्तों के वैरी काम क्रोधादिक का नाश करने से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदितेयप्रियः-देवताओं के प्रिय होने से। दैत्यभीकरः-दैत्यों को डराने वाले हो। इन्दुशेखरः-शिव रूप होकर मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने से ॥ ११ ॥

जरासंधकुलध्वंसी कंसारातिःसुविक्रमः८३०।
पुण्यश्लोकःकीर्तनीयोयादवेन्द्रोजगन्नुतः ।११२।

अर्थ—जरासंध कुलध्वंसी—जरासंध के कुल के नाश करने वाले हो। कंसारातिः-कंस के शत्रु हो। सुविक्रमः-अतिशय विक्रम होने से। पुण्यश्लोकः—आपका यश पुण्य रूप है। कीर्तनीयः—आप कीर्तन करने के योग्य हैं। यादवेन्द्रः—यादवों में श्रेष्ठ होने से। जगन्नुतः-समस्त संसार में स्तुति किये जाते हो ॥११२॥

रुक्मिणीरमणः सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः।
मित्रविंदानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः ॥११३॥

अर्थ—रुक्मिणी रमणः-रुक्मिणी में रमण करने से। सत्यभामा जाम्बवती प्रियः-सत्यभामा और जाम्बवती के प्यारे होने से। मित्रविन्दानाग्नजिती लक्ष्मणा समुपासितः-मित्रवृन्दा, नाग्निजिती और लक्ष्मणा इनसे उपासना किये जाते हो ॥११३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुधाकरकुले जातोऽनंतप्रबलविक्रमः ।
सर्वसौभाग्यसंपन्नो८४०द्वारकायामुपस्थितः ११४

अर्थ—सुधाकर कुलेजातः—चन्द्र कुल में आप उत्पन्न हुए हो। अनंत प्रबल विक्रमः—आपका अनन्त विक्रम है। सर्व सौभाग्य सम्पन्नः—सम्पूर्ण सौभाग्य वस्तुओं से संयुक्त हो। द्वारकायामुपस्थितः—द्वारकाजी में सदैव विराजते हो ॥ ११४ ॥

भद्रासूर्यसुतानाथोलीलामानुष विग्रहः ।
सहस्रषोडशस्त्रीशोभोगमोक्षैकदायकः ॥ ११५ ॥

अर्थ—भद्रा सूर्य सुतानाथः-भद्रा और सूर्य की पुत्री के पति होने से। लीला मानुष विग्रहः-लीला के हेतु मनुष्य रूप धारण करने से। सहस्रषोडशस्त्रीशः-सोलह हजार स्त्रियों के पति होने से। भोग मोक्षैकदायकः—केवल आप ही संसार को भोग और मोक्ष के देने वाले हैं ॥ ११५ ॥

वेदांतवेद्यः संवेद्योवेद्यब्रह्माण्डनायकः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोवर्द्धनधरोनाथः८५०सर्वजीवदयापरः ॥११६॥

अर्थ—वेदांतवेद्यः-वेदांत से जाने जाते हो। सम्वेद्यः-मोक्षादि पदार्थों के निमित्त आप ही उपासना के योग्य हो। वेद्यः-मुक्ति पाये हुए मनुष्य ही आपको प्राप्त होते हैं। ब्रह्माण्ड नायकः-ब्रह्माण्ड के नाथ होने से। गोवर्द्धनधरः-गोवर्द्धन पर्वत उठाने से। नाथः-सबके स्वामी होने से। सर्व जीव दयापरः-सम्पूर्ण जीव मात्र पर दया करने से ॥ ११६ ॥

मूर्तिमान्सर्वभूतात्मा आर्तत्राणपरायणः।
सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्व शास्त्र विशारदः ॥ ११७ ॥

अर्थ—मूर्तिमान-प्रशस्त मूर्ति धारण करने से। सर्वभूतात्मा-सम्पूर्ण प्राणियों की आत्मा के अन्तर्यामी होने से। आर्तत्राण परायणः-दुखियों का दुख दूर करने को सदा उद्यत रहने से। सर्वज्ञः-सबको चेत कराते हो। सर्वसुलभः-भक्ति पूर्वक आप सबको सहज ही में मिल जाते हैं। सर्व शास्त्र विशारदः-सम्पूर्ण शास्त्रों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निपुण होने से ॥ ११७ ॥

षड्गुणैश्वर्यसंपन्नःपूर्णकामो धुरंधरः ८६० ।
महानुभावःकैवल्यदायको लोकनायकः ॥ ११८ ॥

अर्थ—षड्गुणैश्वर्य सम्पन्नः-छः गुण तथा समस्त ऐश्वर्यों से युक्त हैं । पूर्ण कामः—भक्तों की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने से । धुरन्धरः-सम्पूर्ण जगत के भरण पोषण का भार धारण करने से । महानुभावः—आपका प्रभाव प्रशंसनीय है। कैवल्य दायकः—मोक्ष दाता होने से । लोक नायकः-लोकों के अधीश्वर होने से।

आदिमध्यान्त रहितः शुद्धसात्विक विग्रहः ।
असमानःसमस्तात्मा शरणागतवत्सलः ॥ ११६ ॥

अर्थ—आदि मध्यान्त रहितः-भूत, भविष्यत वर्तमान में सदा एक रूप रहने से अथवा आदि मध्य और अन्त से रहित हैं। शुद्ध सात्विक विग्रहः-शुद्ध और सात्विकी शरीर होने से । असमानः-असाधारण पुरुष होने से। समस्तात्मा—सब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सचराचर की आत्मा के अन्तर्यामी होने में। शरणागत वत्सलः-शरण में आने वालों के आप रक्षक हैं ॥ ११९ ॥

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम् सर्वकारणम् ८७० ।
गंभीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः ॥ १२० ॥

अर्थ—उत्पत्तिस्थिति संहार कारणम्—विश्व के उत्पत्ति स्थिति तथा पालन कर्ता होने से। सर्व कारणम्—सबके कारण भूत होने से। गंभीरः—अति गंभीर होने से। सर्व भावज्ञः—सब प्राणियों के अभिप्राय को आप जानते हैं। सच्चिदानन्द विग्रहः—सत्, चित् और आनंद रूप विग्रह धारण करने से ।१२० ॥

विष्वक्सेनः सत्यसंधः सत्यवान्सत्यविक्रमः ।
सत्यव्रतः सत्यसंज्ञः सर्व धर्मपरायणः ८८० ।१२१ ।

अर्थ—विष्वक्सेनः-आपकी सेना विषूची है। सत्य सन्धः—आपकी प्रतिज्ञा सत्य है। सत्यवान्-सत्यवान् रूप होने से। सत्य विक्रमः-आपका सत्य पराक्रम है। सत्यव्रतः-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपका संकल्प सत्य है। सत्यसंज्ञः-आपकी सत्य ही संज्ञा है। सर्व धर्म परायणः-आप सब धर्मों में लीन हैं॥ १२१॥

आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदी मानरक्षकः।
कंदर्पजनकः प्राज्ञोजगन्नाटकवैभवः॥ १२२॥

अर्थ—आपंन्नार्तिप्रशमनः-शरणागतों के दुख के नाश कर्ता होने से। द्रौपदी मान रक्षकः-द्रौपदी की लाज के रक्षक होने से। कन्दर्प जनकः-कामदेव के उत्पन्न करने वाले हो। प्राज्ञः-प्रकर्ष करके सबको जानने से। जगन्नाटक वैभवः-जगत् रूप नाटक आपका वैभव है॥ १२२॥

भक्तिवश्यो गुणातीतः सर्वैश्वर्यप्रदायकः।
दमघोषसुतद्वेषीबाणबाहुविखंडनः८६०॥ १२३॥

अर्थ—भक्तिवश्यः-भक्ति के आधीन होने से। गुणातीतः-प्राकृत गुणों से रहित होने से। सर्वैश्वर्य प्रदायकः—सम्पूर्ण ऐश्वर्य के दाता होने से। दमघोष सुत द्वेषी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिशुपाल का मद नाश करने से। बाण बाहु विखण्डनः-बाणासुर की सहस्र बाहुओं के खंडन करने से ॥ १२३ ॥

भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यःकौरवान्वयनाशनः ।
कौन्तेयप्रियबन्धुश्चपार्थस्यन्दनसारथिः ।१२४ ।

अर्थ—भीष्म भक्ति प्रदः—भीष्म पितामह को भक्ति का वरदान देने से। दिव्यः—दिव्य लीलाओं के करने वाले हो। कौरवान्वय नाशनः—कौरव वंश के नाश करने वाले हो। कौन्तेय प्रिय बन्धुः—कुन्ती के पुत्र आपके प्रिय बन्धु हैं। पार्थस्यन्दनसारथिः—अर्जुन के रथ के सारथी होने से ॥ १२४ ॥

नारसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः ।
प्रह्लादवरदः९००सत्यो देवपूज्योऽभयंकर। १२५ ।

अर्थ—नारसिंहः—नरों में उत्तम, वीर्यवान्, पराक्रमी होने से। महावीरः-बड़े पराक्रमी होने से। स्तम्भजातः—खम्भ फाड़ कर प्रगट होने से। महाबलः-बलवानों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में भी आप बली हैं। प्रह्लाद वरदः-प्रह्लाद को वरदान देने से। सत्यः-महात्माओं के हितकारक होने से। देव पूज्यः--देवताओं के भी पूजनीय होने से। अभयङ्करः-भक्तों को अभय देने से ॥ १२५ ॥

उपेन्द्र इन्द्रावरजोवामनो बलिबन्धनः ।
गजेन्द्रवरदः स्वामीसर्वदेवनमस्कृतः॥ १०॥१२६॥

अर्थ--उपेन्द्रः-इन्द्र आपके पास रहता है। इन्द्रावरजः-इन्द्र से आप लघु हैं। वामनः-लघु रूप धारण करने से। बलि बंधनः-बालि को बांधने से। गजेन्द्र वरदः-गजेन्द्र को वर देने से। स्वामी सब जगत के स्वामी होने से। सर्व देवनमस्कृतः--सम्पूर्ण देवता आपको नमस्कार करते हैं ॥ १२६ ॥

शेषपर्यंकशयनो वैनतेयरथोजयी ।
अव्याहतबलैश्वर्यसंपन्नः पूर्णमानसः ॥ १२७ ॥

अर्थ—शेषपर्यंकशयनः-शेषनाग की शैया पर शयन करते हैं। वैनतेयरथः-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गरुड़ आपका वाहन है। जयी-सब को जीतने वाले हैं। अव्याहतबलैश्वर्य सम्पन्नः-- अव्याहतबल और ऐश्वर्य करके युक्त होने से । पूर्णमानसः-सम्पूर्ण अभिलाषाऐं पूर्ण होने से ॥ १२७ ॥

योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञानदायकः ।
योगिहृत्पङ्कजावासो ६२० योगमायासमन्वितः ॥

अर्थ---योगेश्वरेश्वरः-योगीश्वरों के भी ईश्वर हैं। साक्षीः-सम्पूर्ण प्राणियों के शुभ अशुभ को साक्षात् देखने से। क्षेत्रज्ञः-क्षेत्र को जानते हो। ज्ञानदायकः-ज्ञान के दाता होने से। योग हृत्पंकजावासः-योगियों के हृदय कमल में निवास करने से। योग माया समन्वितः-योग माया में सदा अन्वित रहने से ॥ १२८ ॥

नादबिन्दुकलातीतश्चतुर्वर्गफलप्रदः ।
सुषुम्नामार्गसंचारी देहस्यान्तरसंस्थितः ॥१२९॥

अर्थ---नादबिन्दु कलातीतः-स्वर, अनुस्वार, विसर्ग और मात्राओं के विषय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में अतिशय व्याप्त होने से। चतुर्वर्गफल प्रदः-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ के देने वाले हो। सुषुम्ना मार्ग संचारी–सुषुम्नादि नाड़ियों के मार्ग में विचरने से। देहस्यान्तर संस्थितः–सब की देह के भीतर स्थित रहने से ॥ १२६ ॥

देहेन्द्रियमनः प्राणसाक्षी चेतः प्रसादकः ।
सूक्ष्मः सर्वगतो देही९३० ज्ञानदर्पणगोचरः ।१३०।

अर्थ—देहेन्द्रियमनः प्राणसाक्षी–देह, इन्द्रिय, मन प्राण इनके साक्षात् दृष्टा होने से। चेतः प्रसादकः-भक्तों के चित्त को प्रसन्न करने से। सूक्ष्मः-अणु रूप से सब में विद्यमान होने से। सर्वगतः-आपकी सर्वत्र गति है। देही–जीव के अन्तर्यामी होने से।ज्ञान दर्पण गोचरः-ज्ञान रूपी दर्पण द्वारा आप जाने जाते हो ॥ १३० ॥

तत्त्वत्रयात्मकोऽव्यक्तः कुण्डलीसमुपाश्रितः।
ब्रह्मण्यःसर्वधर्मज्ञःशांतो दांतो गतक्लमः ॥१३१॥

अर्थ—तत्त्वत्रयात्मकः–जीव ईश्वर और प्रकृति जो तीनों तत्त्व इन करके आत्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरूप है आपका। अव्यक्तः-आपके भाव जानने में नहीं आते। कुण्डली समुपाश्रितः-काली नाथने के समय कुण्डली (काली) उसने आपकी उपासना की थी। ब्रह्मण्यः—ब्रह्म, जीव, वेद और प्रकृति से जाने जाते हो। सर्व धर्मज्ञः-सम्पूर्ण वर्णाश्रम धर्मों को जानते हो। शान्तः—शान्त स्वरूप होने से। दान्तः-दया युक्त होने से। गतक्लमः-आपको कभी परिश्रम नहीं होता है॥ १३१॥

श्रीनिवासः ६४० सदानंदो विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः।
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥१३२॥

अर्थ——श्रीनिवासः-लक्ष्मी का निवास स्थान होने से। सदानन्दः--सर्वदा आनन्द पूर्वक रहने से। विश्वमूर्तिः—आपकी मूर्ति विश्व में व्यापक है। महाप्रभुः-आप से जगत उत्पन्न होता है। सहस्रशीर्षा-आपके सहस्रों अनन्त सिर हैं। पुरुषः-सम्पूर्ण प्राणियों में निवास करने से। सहस्राक्षः-सहस्रों आँख वाले होने से। सहस्रपात्-सहस्रों चरण रखने से॥ १३२॥

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समस्तभुवनाधारः समस्तप्राणरक्षकः ।
समस्तसर्वभावज्ञो९५०गोपिकाप्राणवल्लभः ॥१३३

अर्थ—समस्तभुवनाधारः--सम्पूर्ण भुवन के आधार होने से। समस्त प्राण रक्षकः-अखिल जीवों के पालक होने से। समस्तः-सब विश्व आपका है और जो कुछ हो सो आप ही हो। सर्व भावज्ञः--सब के भावों को जानने से। गोपिका प्राण वल्लभः-गोपियों के आप प्राण प्यारे हो ॥ १३३ ॥

नित्योत्सवो नित्यसौख्यो नित्यश्रीर्नित्यमंगलः ।
व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुण्ठपुराधिपः ॥१३४॥

अर्थ--नित्योत्सवः--आपके नित्य नवीन चरित्र हैं। नित्य सौख्यः--नित्य नवीन सुख देने से। नित्य श्रीः-नित्य नवीन कान्ति धारण करने से। नित्य मङ्गलः-नित्य नवीन मङ्गल रूप हो। व्यूहार्चितः-चतुर्व्यूह रूप से अर्चित हो। जगन्नाथः-जगत के नाथ होने से। श्री वैकुण्ठ पुराधिपः-श्रीवैकुण्ठपुर के अधीश्वर होने से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

पूर्णानंदघनी भूतो गोपवेषधरो ६६० हरिः।
कलापकुसुमश्यामः कोमलः शांतविग्रहः ॥१३५॥

अर्थ— पूर्णानन्द घनी भूतः-पूर्ण आनन्द रूप मूर्ति होने से। गोपवेषधरः-गोप वेष धारण करने से। हरिः-भक्तों को आनन्द देने से। कलाप कुसुमश्यामः-मोर पंख तथा अलसी के फूल की तरह श्याम वर्ण होने से। कोमलः-सुकुमार होने से। शान्त विग्रहः-शान्त मूर्ति होने से ॥ १३५ ॥

गोपाङ्गनावृतोऽनन्तोवृन्दावनसमाश्रयः।
वेणुवादरतः श्रेष्ठो देवानांहितकारकः६७०१३६।

अर्थ—गोपाङ्गनावृतः-गोपाङ्गनाओं से घिरे रहने से। अनन्तः-आपकी गम्भीरता की थाह न होने से। वृन्दावन समाश्रयः-वृन्द्रावन में विहार करने से। वेणु वादरतः-सदा वंशी बजाते रहते हैं। श्रेष्ठः-सर्वोत्तम होने से। देवानां हित कारकः-देवताओं के भी हितकारी होने से ॥ १३६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालक्रीड़ासमासक्तो नवनीतस्यतस्करः ।
गोपालकामिनीजारश्चौरजार शिखामणिः ॥१३७॥

अर्थ—बाल क्रीड़ा समासक्तः-बालकों के साथ खेलने में प्रसन्न रहते हैं। नवनीतस्यतस्करः-माखन चोर होने से। गोपाल कामिनी जारः-गोपियों में प्रेम रखने से। चौरजार शिखा मणिः-चोर और व्यभिचारियों के शिरोमणि होने से ॥ १३७ ॥

परंज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः ।
अष्टादशाक्षरोमंत्रो६८०व्यापकोलोकपावनः ॥

अर्थ—परं-परिपूर्ण होने से। ज्योतिः—सब के प्रकाशक होने से। पराकाशः—जीवों को परीक्षा देने से। परावासः—आपका निवास स्थान सर्वोत्तम होने से। परिस्फुटः—भक्तों की रक्षा के हेतु सब जगह प्रगट होने से। अष्टादशाक्षरो मन्त्र—अष्टादशाक्षर मंत्र रूप होने से। व्यापकः-जगत में व्यापक होने से। लोक पावनः—तीनों लोकों को पवित्र करते हो ॥ १३८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरो देवशेखरः ।
विज्ञानं ज्ञानसंधानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः ।१३९ ।

अर्थ—सप्त कोटि महामन्त्रशेखरः-सात करोड़ महामन्त्रों के आप शिरोमणि हैं। देव शेखरः–देवताओं के आप शिरोमणि हैं। विज्ञानं ज्ञान संधानः–अनुभव और शास्त्रीय ज्ञान से जानने योग्य हो। तेजोराशिः–तेज सुगन्धित पदार्थों के समूह हो। जगत्पतिः–संसार के स्वामी हो ॥ १३९ ॥

भक्तलोकप्रसन्नात्मा भक्तमंदारविग्रहः६९० ।
भक्तदारिद्र्यदमनो भक्तानांप्रीतिदायकः ॥१४०॥

अर्थ — भक्तलोक प्रसन्नात्मा–भक्तों की आत्मा सदा प्रसन्न रखने से। भक्त मन्दार विग्रहः–भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने से। भक्त दारिद्र्यदमनः–भक्तों के दरिद्र को नाश करने से। भक्तानां प्रीति दायकः–भक्तों को अभीष्ट फल के दाता होने से ॥ १४० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्ताधीनमनाः पूज्यांभक्त लोक शिवङ्करः ।
भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघनिकृंतनः ॥१४१॥

अर्थ—भक्ताधीनमनाः-आपका मन भक्तों के अधीन होने से । पूज्यः-ब्रह्मादिक के भी आप पूज्य हो। । भक्त लोक शिवङ्करः-भक्त जनों के कल्याणकारी होने से । भक्ताभीष्टप्रदः-भक्तों को अभीष्ट फल देने से । सर्व भक्ताघौघनिकृन्तनः-अपने भक्तों के सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने से ॥ १४१ ॥

अपारकरुणासिंधुर्भगवान् भक्ततत्परः॥ १०००॥

अर्थ—-अपार करुणासिंधुः—अपार करुणा के सिन्धु होने से । भगवान्—सम्पूर्ण वैभव युक्त होने से । भक्ततत्परः—भक्तों के उद्धार में सदैव दत्तचित रहने से ॥ १४२ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* अथ माहात्म्यम् *

इति श्रीराधिकानाथ सहस्रनामकीर्तनम् ।
स्मरणात्पापराशीनां खण्डनंमृत्युनाशनं ॥ १ ॥

अर्थ---ऊपर जो श्रीराधिकानाथ श्रीगोपालजी के सहस्र नाम वर्णन किये गये हैं इनके स्मरण मात्र से पाप समूह का नाश और अकाल मृत्यु का नाश हो जाता है ॥ १ ॥

वैष्णवानां प्रियकरं महारोगनिवारणम् ।
ब्रह्महत्यासुरापानं परस्त्रीगमनं तथा ॥ २ ॥

अर्थ---यह वैष्णवों को अभीष्ट फल का देने वाला है और राज रोगों का विनाशक है ब्रह्महत्या, मद्यपान, पर स्त्री गमन के दूषण इस सहस्रनाम के कीर्तन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से दूर होजाते हैं ॥ २ ॥

परद्रव्यापहरणं परदूषसमन्वितम् ।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसम्भवं ॥ ३ ॥

अर्थ—पराये दोष में लिप्त होकर जो मनुष्य पराये द्रव्य को पराई धरोहर को हर ले तथा नहीं दे और अन्य पाप से उत्पन्न जो मन कर्म वाणी से हुए पाप, सो तत्क्षण इस सहस्रनाम के पाठ करने से नाश हो जाते हैं ॥ ३ ॥

सहस्रनामपठनात्सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ।
महादारिद्र्ययुक्तो यो वैष्णवोविष्णुभक्तिमान्॥४॥
कार्तिक्यां सम्पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात् ।
पीताम्बरधरो धीमान्सुगन्धिपुष्पचन्दनैः ॥ ५ ॥

अर्थ—जो मनुष्य महा दारिद्र्य से ग्रसित हो तो भी विष्णु मन्त्र का उपासक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैष्णव विष्णु की भक्ति में श्रद्धालु होकर कार्तिक में अमावस्या की रात्रि को पीताम्बर पहर शुद्ध होय १०८ पाठ करे ॥ ४ ॥ ५ ॥

पुस्तकं पूजयित्वा तु नैवेद्यादिभिरेव च ।
राधाध्यानांकितो धीरो बनमालाविभूषितः । ६ ।
शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ।
चैत्रशुक्ले च कृष्णे च कुहूसंक्रान्तिवासरे ॥ ७ ॥

अर्थ—सुगन्ध पुष्प चन्दन और नैवेद्य से गोपाल सहस्रनाम की पुस्तक का पूजन करे आप वन के फूलों की माला को पहन स्वस्थ चित्त होकर प्रथम श्रीराधिका जी का ध्यान करे । इस तरह हे पार्वती चैत्र मास में शुक्ल अथवा कृष्णपक्ष में अमावस्या को अथवा संक्रान्ति के दिन इस स्तोत्र के १०८ पाठ करे ॥ ६ ॥ ७ ॥

पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः ॥८॥

अर्थ—तुलसी की माला पहर विष्णु की भक्ति में तत्पर हो एकाग्रचित्त से सावधानी से इसका पाठ करे तो शीघ्र त्रिलोकी को अपने वश में कर ले॥ ८॥

रविवारे च शुक्रे च द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः ॥ ९ ॥

अर्थ—रविवार को, शुक्ल पक्ष को द्वादशी को तथा श्राद्ध के दिन ब्राह्मण की विधिवत् पूजा करे फिर भोजन करे सहस्रनाम का पाठ करे तो सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि होती है ॥ ९ ॥

पठेन्नामसहस्रञ्च ततः सिद्धिः प्रजायते ।
महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा ॥ १० ॥
देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रैलोक्ये च महादेवि सुन्दर्यःकाममोहिताः ॥११॥
मुग्धाःस्वयं समायान्ति वैष्णवञ्च भजन्ति ताः।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धोमुच्येत बंधनात् ॥१२॥

अर्थ--दीप मालिका की रात्रि को जो वैष्णव निरन्तर इस सहस्रनाम का पाठ करता है उसकी देशान्तर को गई हुई लक्ष्मी भी फिर मिल जाती है, यह निश्चय है और त्रिलोकी में बड़ी सुन्दर स्त्री काम से स्वयम् उस वैष्णव के पास आ जाती है और रोगी का रोग जाता रहता है तथा कैदी कैद से छूट जाता है ।१०।११।१२।

गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विंदति सत्पतिम् ।
राजानो वश्यतांयांति किं पुनः क्षुद्रमानवाः ॥१३॥

अर्थ--जो गर्भवती स्त्री इस स्तोत्र को सुनती है उसके पुत्र पैदा होता है कन्या को श्रेष्ठ पति मिलता है राजा वशीभूत हो जाता है फिर छोटे मनुष्यों का तो कहना ही क्या है ॥ १३ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहस्रनामश्रवणात्पठनात्पूजनात्प्रिये ।
धारणात्सर्वमाप्नोति वैष्णवो नात्रसंशयः ॥१४॥

अर्थ--हे प्रिये ! स्वयम् पाठ करने से अथवा पुस्तक के पूजन व संग्रह से, वैष्णव सम्पूर्ण अभीष्ट फलों को निःसंदेह पाता है ॥ १४ ॥

वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा ।
कदम्बपादपतले गोपालमूर्तिसन्निधौ ॥ १५ ॥
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमंदिरम् ।
कृष्णेनोक्तं राधिकायै मयि प्रोक्तं पुराशिवे ॥१६॥

अर्थ--वृन्दावन में बन्शीवट पर और अन्य स्थानों में पीपल के नीचे अथवा कदम्ब के नीचे अथवा अपनी पूजा करने की गोपालमूर्त्ति के पास जो नित्य प्रति पाठ करता है वह वैकुण्ठ में जाता है । हे प्राणवल्लभे ! यह स्तोत्र पहिले श्रीकृष्ण ने राधिकाजी से कहा था और राधिकाजी ने मुझ से कहा था ॥१५॥१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नारदाय मया प्रोक्तम् नारदेन प्रकाशितम् ।
मया त्वयि वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम् ॥ १७ ॥

अर्थ—श्रीकृष्ण ने पहिले नारदजी से कहा फिर नारदजी ने लोक के अर्थ प्रकाश किया और हे सुजघने वरारोहे ! यह दुर्लभ सहस्रनाम मैंने तेरे निमित्त प्रकाश किया है ॥ १७ ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथञ्चन ।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः ॥ १८ ॥

अर्थ—अति प्रयत्न से रक्षा करे किसी को न दे और विशेष कर साधुवंचक और पर स्त्री गामी को कदापि इस सहस्रनाम का उपदेश न करे ॥ १८ ॥

न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ।
देयं शिष्याय शांताय विष्णुभक्तिरतायच । १९ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ— इस सहस्त्रनाम को कभी किसी को न दे और जो कदाचित् देना ही पड़े तो साधु शिष्य को देवे और विष्णु की भक्ति में तत्पर हो उसे देवे ॥ १६ ॥

गोदानब्रह्मयज्ञस्यवाजपेयशतस्य च ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद्ध्रुवम् ॥ २० ॥

अर्थ—जो मनुष्य इस सहस्त्रनाम का पाठ करता है उस गोदान सहित ब्रह्म यज्ञ और वाजपेय और हजार अश्वमेध का फल निश्चय होता है ॥ २० ॥

मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ।
यद्यद्वाञ्छति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः ॥ २१ ॥

अर्थ—जो विष्णु भक्त मोहन, स्तम्भन, मारण, उच्चाटनादि अपने चित्त से चाहे सोई सोई प्राप्त हो सकता है ॥ २१ ॥

एकादश्यांनरः स्नात्वा सुगंधिद्रव्यतैलकैः ।
आहारं ब्राह्मणे दत्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणं ॥ २२ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ——सुगन्धित द्रव्यों से युक्त तिल के तैल से उबटन स्नान करके एकादशी के दिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर सोने के आभूषण की दक्षिणा देकर जो मनुष्य इसका पाठ करे सो मन वांछित फल पावे ॥ २२ ॥

तत आरम्भकर्ताऽस्य सर्वं प्राप्नोति मानवः ।
शतावृत्तं सहस्रञ्च यः पठेद्वैष्णवो जनः ॥२३॥

अर्थ—जो वैष्णव सौ अथवा हजार पाठ करे सो श्रीवृन्दावन चन्द्र श्रीकृष्ण चन्द्र की कृपा से सम्पूर्ण मन वांछित फल को पावेगा ॥ २३ ॥

श्रीवृन्दावनचंद्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात् ।
यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति ॥ २४ ॥
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित् ।
सर्पादिभूतयक्षाद्या नश्यन्ति नात्रसंशयः ॥ २५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—हे पार्वती ! जिसके घर में पुस्तक का पूजन होता है उसके महामारी दुर्भिक्ष उपसर्ग भय नहीं रहते तथा भूत, यक्ष, सब नाश को प्राप्त होते हैं इसमें सन्देह नहीं है ॥ २४ ॥ २५ ॥

श्रीगोपालो महादेवविवसेत्तस्य गृहे सदा ।
गृहे यत्र सहस्रम् च नाम्नां तिष्ठति पूजितं ॥२६॥

अर्थ—हे महादेवी जिसके घर में केवल सहस्रनाम का ही पूजन होता है वहाँ श्री गोपालजी निरन्तर बास करते हैं ॥ २६ ॥

इति श्रीसंमोहनतंत्रे पार्वतीश्वरसंवादे

श्रीगोपाल सहस्रनाम स्तोत्रम् समाप्त् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* अथ गोपालस्तवराजः *

ॐ अस्य श्रीगोपालस्तोत्रमन्त्रस्य नारदऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः ॥ श्रीकृष्णः परमात्मा देवता ॥ श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ सजलजलदनीलं दर्शितोदारशीलं करतलधृतशैलं वेणुवाद्ये रसालं ॥ व्रज जनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं तरुणतुलसिमालं नौमि गोपालबालम् ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"ॐ अस्य से जपे विनियोगः" तक पढ़कर विनियोग करना चाहिये। अनंतर 'सजल जलद' इत्यादि मन्त्र को पढ़कर ध्यान करे।

अर्थ—जल से पूर्ण मेघ के समान नील वर्ण है जिनका, जो सब जगह अपने उदार चित्त का परिचय देते रहते हैं, इन्द्र के कुपित होने पर गोवर्द्धन पर्वत को जिन्होंने अधर उठा लिया था, बन्शी बजाने में बड़े प्रवीण, ब्रजवासियों का पालन पोषण करने वाले, कामिनी (सुन्दर स्त्रियों) के संग किलोल (विहार) करने के इच्छुक, नवीन तुलसीदल की माला जिनके गले में पड़ी हुई है ऐसे बाल रूपधारी गोपालजी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

❀ नारद उवाच ❀

नवीननीरद श्यामं नीलेन्दीवरलोचनम् ।
वल्लवीनन्दनम् वंदे कृष्णं गोपालरूपिणम् ॥२॥

अर्थ—नारदजी बोले नये बादलों के समान श्याम रंग और नील कमल के समान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं जिनके लोचन, गोपिकाओं को सदा प्रसन्न करने वाले ऐसे गोपाल रूपधारी श्रीकृष्ण भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥

स्फुरद्बर्हदलोद्बद्धनीलकुञ्चितमूर्धजम् ।
कदम्बकुसुमोद्दामसिवन मालाविभूषितम् ॥ ३ ॥

अर्थ—हवा के वेग से हिलते हुए मोर पंख से शोभायमान, सुन्दर कालेकेश जिनके मस्तक पर शोभा देते हैं, तथा कदम्ब के पुष्पों की माला से सुसज्जित हैं ॥ ३ ॥

गण्डमण्डल संसर्गिचलत्काञ्चनकुण्डलम् ।
स्थूलमुक्ताफलो दारहारोद्द्योतितवक्षसम् ॥ ४ ॥

अर्थ—कपोलों के पास हिलता हुआ सोने का कुण्डल शोभा देरहा है, तथा बड़े बड़े मोतियों का हार जिनकी छाती पर पड़ा शोभता है ॥ ४ ॥

हेमांगदतुलाकोटिकिरीटोज्ज्वलविग्रहम् ।
मंदमारुतसंक्षोभिवलिताम्बर संचयम् ॥ ५ ॥

...ग्रन्थालय, ... वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—हाथों में सोने की तुला तथा मस्तक पर किरीट चमकने से जिनके (भगवान) शरीर की सुन्दरता बढ़ गई है मंद मंद वायु से वस्त्र हिल रहे हैं ॥ ५ ॥

रुचिरौष्ठपुटन्यस्तवंशी मधुरनिः स्वनैः ।
लसद्गोपालिकाचेतां मोहयंतं मुहुर्मुहुः ॥ ६ ॥

अर्थ— सुन्दर होठों पर बन्शी शोभायमान है जिससे मधुर तान निकल रही है। तथा अपने अनुपम कटाक्ष से गोपियों का मन वस में किये हुए हैं ॥ ६ ॥

बल्लवीवदनाम्भोजमधुपानमधुव्रतम् ।
क्षोभयन्तं मनस्तासां सस्मेरापाङ्गवीक्षणैः ॥७॥

अर्थ—जिन्होंने गोपियों के कमल रूपी मुख का मधुपान करने का व्रत सा ले रक्खा तथा जिनकी तिरछी चितवन की मुस्कराहट भक्तों के दुःख को हरे लेती है ॥ ७ ॥

यौवनोद्भिन्नदेहाभिः संसक्ताभिः परस्परं ।
विचित्राम्बरभूषाभिर्गोपनारीभिरावृतं ॥ ८ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—जिनके शरीर से यौवन झलक रहा है तथा एक दूसरे से मिली हुई हैं, जो विचित्र प्रकार के वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हैं ऐसी गोपियों ने जिनको घेर रक्खा है।

प्रभिन्नाञ्जनकालिंदी-जलकेलिकलोत्सुकं ।
याधयंतं क्वचिद्गोपान्व्याहरन्तं गवां गणं ॥९॥

अर्थ—काजल के समान कालिन्दी के काले जल में किलोल करने को उत्सुक हैं जो, तथा कभी ग्वाल बालों से हास्य करते हैं और कभी गौओं को उनके रंग के नाम से पुकारते हैं ॥ ९ ॥

कालिंदीजलसंसर्गिशीतलानिलकम्पिते ।
कदम्बपादपच्छायेस्थितं वृन्दावने क्वचित् ॥१०॥

अर्थ—जो कभी वृन्दावन में वायु से शीतल हुए यमुना जल के पास तथा वायु से हिलते हुए कदम्ब वृक्ष की छाया में बैठे रहते हैं ॥ ११ ॥

रत्नभूधरसंलग्नरत्नासनपरिग्रहम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल्पपादपमध्यस्थं हेममण्डपिकागतम् ॥ ११ ॥

अर्थ— रत्नों से बने हुए पर्वत पर तथा रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजते हैं तथा कभी कभी कल्प वृक्ष के नीचे हेम मण्डप पर भी बैठते हैं ॥ ११ ॥

वसंतकुसुमामोदसुरभीकृतदिङ्मुखे ।
गोवर्धनगिरौ रम्ये स्थितम् रासरसोत्सुकं ॥ १२ ॥

अर्थ—कभी कभी बसंत ऋतु में खिले हुए पुष्पों की सुगन्धि में गोवर्द्धन पर्वत पर रमते हुए रास क्रीड़ा करने को उत्सुक दिखाई देते हैं ॥ १२ ॥

सव्यहस्ततलन्यस्तगिरिवर्यातपत्रकं ।
खण्डिताखण्डलोन्मुक्तमुक्तासारघनाघनं ॥ १३ ॥

अर्थ—अपने बाँये हाथ पर गोवर्द्धन पर्वत को छत्री के समान धारण किये हुए हैं, जिससे इन्द्र का घमण्ड चूर चूर होगया है ॥ १३ ॥

वेणुवाद्यमहोल्लासकृतहुंकारनिः स्वनैः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सवत्सैरूमुखैः शश्वद्गोकुलैरभिवीक्षितम् ॥१४॥

अर्थ--बड़े जोर से हुंकार करते हुए वन्शी बजाने में बड़ा उल्लास दिखाते हैं तथा गोकुल की गायें अपने बछड़ों समेत जिनको बार बार देखती हैं ॥ १४ ॥

कृष्णमेवानुगायद्भिस्तच्चेष्टावशवर्तिभिः ।
दण्डपाशोद्यतकरैर्गोपालैरुपशोभितं ॥ १५ ॥

अर्थ--जो केवल कृष्ण का गुणानुवाद करते हैं, तथा उन्हीं की लीलाओं के वश में रहते हैं, जिनके हाथों में डण्डे व रस्सी हैं ऐसे ग्वाल वालों ने जिनको चारों ओर से घेर रक्खा है ॥ १५ ॥

नारदाद्यैर्मुनिश्रेष्ठैर्वेदवेदांगपारगैः ।
प्रीतिसुस्निग्धया वाचा स्तूयमानं परात्परं ॥१६॥

अर्थ--जो वेद वेदाङ्ग के जानने वाले नारदादि मुनियों की प्रेम से सनी वाणी से स्तूयमान परब्रह्म परमात्मा स्वरूप हैं ॥ १६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

य एवं चिन्तयेद्देवंभक्त्यायः स्तौतिमानवः ।
त्रिसंध्यंतस्यतुष्टोऽसौददातिवरमीप्सितम् ॥१७॥

अर्थ--ऐसे भगवान श्रीकृष्ण का जो मनुष्य भक्ति पूर्वक सदैव ध्यान या स्मरण करता है उस पर प्रसन्न होकर भगवान उसको अवश्य ही मन चाहा वरदान देते हैं ॥ १७ ॥

राजवल्लभतामेति भवेत्सर्वजनप्रियः ।
अचलांश्रियमाप्नोतिसवाग्मीजायतेध्रुवं ॥१८॥

अर्थ--राजाओं में उसका सम्मान होता है तथा सब लोग उस प्यार करते हैं। उसके पास लक्ष्मी सदा स्थिर रहती है इसमें संदेह नहीं है ॥ १८ ॥

❀ इति श्रीगोपालस्तवराज सम्पूर्णः ❀

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* अथ गोपालकवचम् *

* श्रीमहादेव उवाच *

अथवक्ष्यामिकवचम् गोपालस्यजगद्गुरोः ।
यस्यस्मरणमात्रेणजीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥ १ ॥

अर्थ---शिवजी बोले--हे पार्वती ! अब में जगद्गुरू गोपाल जी का कवच कहता हूँ जिसके स्मरण मात्र से मनुष्य संसार सागर से पार होजाता है ॥ १ ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिसावधानावधारय ।
नारदोऽस्यऋषिर्देविछंदोऽनुष्टुबुदाहृतम् ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ--हे देवी ! उस कवच को तुम सावधान होकर सुनो । इस कवच के ऋषि नारदजी हैं तथा इसका अनुष्टुप्छन्द है ॥ २ ॥

देवताबालकृष्णश्चचतुर्वर्गप्रदायकः ।
शिरोमेबालकृष्णश्चपातुनित्यंममश्रुती ॥ ३ ॥

अर्थ--बाल कृष्ण इसके देवता हैं जो चारों वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के देने वाले हैं । वे बालकृष्ण नित्य मेरे मस्तक तथा कानों की रक्षा करें ॥ ३ ॥

नारायणः पातुकंठंगोपीवन्द्यः कपोलकं ।
नासिकेमधुहापातुचक्षुषीनन्दनन्दनः ॥ ४ ॥

अर्थ--भगवान नारायण कण्ठ की, गोपीवन्द्य कपोल की, मधुहा नासिका की और नन्दनन्दन नेत्रों की रक्षा करें ॥ ४ ॥

जनार्दनः पातुदन्तानधरंमाधवस्तथा ।
ऊर्ध्वोष्ठंपातुवाराहश्चिबुकंकेशिसूदनः ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्थ—जनार्दन दाँतों की, माधव अधरों की, वाराह भगवान ऊपर के ओष्ठ की और केशिसूदन भगवान मेरी ठोड़ी की रक्षा करें ॥ ५ ॥

हृदयंगोपिकानाथोनाभिसेतुप्रदः सदा ।
हस्तौगोवर्धनधरः पादौपीतांबरोऽवतु ॥ ६ ॥

अर्थ—गोपियों के नाथ श्रीकृष्णजी हृदय की, सेतुप्रद भगवान नाभि की, गोवर्द्धन पर्वत को धारण करने वाले भगवान मेरे हाथों की तथा पीताम्बर धारण करने वाले मेरे पांवों की सदैव रक्षा करें ।

करांगुलीः श्रीधरो मे पादांगुल्यः कृपामयः ।
लिंगं पातु गदापाणिर्बालक्रीड़ामनोरमः ॥७॥

अर्थ-श्रीधर हाथ की उँगलियों की, कृपा मय पैर की अंगुलियों की, सुन्दर बालक्रीडा में लगे हुए गदापाणि मेरे लिंग की रक्षा करें ॥ ७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगन्नाथः पातुपूर्वंश्रीरामोऽवतुपश्चिमम् ।
उत्तरं कैटभारिश्चदक्षिणंहनुमत्प्रभुः ॥ ८ ॥

अर्थ—जगन्नाथजी पूर्व दिशा की, श्रीरामजी पश्चिम की, कैटभारि (कैटभ राक्षसके शत्रु) उत्तर की और हनूमानजी के प्रभु दक्षिण दिशा की रक्षा करें ॥८॥

आग्नेय्यांपातुगोविंदोनैऋर्त्यांपातुकेशवः ।
वायव्यांपातुदैत्यारि रैशान्यांगोपनंदनः ॥ ९ ॥

अर्थ-गोविन्द भगवान आग्नेय दिशाकी, केशव नैऋर्त्य की, दैत्यों के वैरी दैत्यारि वायव्य की तथा गोपीनन्दन ईशान दिशा की रक्षा करें ॥ ९ ॥

ऊर्ध्वं पातु प्रलंबारिरधः कैटभमर्दनः ।
शयानं पातु पूतात्मा गतौ पातु श्रियःपतिः ॥१०॥

अर्थ—प्रलम्बासुर के वैरी ऊपर की, कैटभासुर के मारने वाले नीचे की, सोते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय पूतात्मा (जिनकी आत्मा पवित्र है) और चलते समय श्रीलक्ष्मी जी के पति भगवान विष्णु मेरी रक्षा करें ॥ १० ॥

शेषः पातुनिरालम्बे जाग्रद्भावेह्यपांपतिः ।
भोजने केशिहा पातु कृष्णः सर्वांगसंधिषु ॥११॥

अर्थ—निरालम्ब होने पर शेष भगवान, जाग्रत अवस्था में जल तत्व के स्वामी (अपाम्पति) भोजन के समय केशिहा और कृष्ण भगवान मेरे शरीर की सब संधियों की रक्षा करें ॥ ११ ॥

गणनासु निशानाथो दिवानाथो दिनक्षये ।
इतितेकथितंदिव्यंकवचंपरमाद्भुतम् ॥ १२ ॥

अर्थ—गणना करते समय निशानाथ, दिन के अस्त होते समय दिवानाथ रक्षा करें । यह कवच परम अद्भुत तथा दिव्य है जो कि मैंने तुमसे कहा है ॥१२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यः पठेन्नित्यमेवेदं कवचं प्रयतो नरः ।
तस्याशु विपदो देवि नश्यंति रिपुसंघतः ॥ १३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य नित्य प्रति इस कवच का पाठ करते हैं उनकी सब विपत्तियां नाश हो जाती हैं ॥ १३ ॥

अंते गोपालचरणं प्राप्नोति परमेश्वरि ।
त्रिसंध्यमेकसंध्यं वा यः पठेच्छृणुयादपि ॥ १४ ॥

अर्थ—हे परमेश्वरि ! अंत में उनको गोपालजी के चरण प्राप्त होते हैं। जो इसको तीनों काल अथवा एक काल भी पढ़ते व सुनते हैं ॥ १६ ॥

तं सर्वदा रमानाथः परिपाति चतुर्भुजः ।
अज्ञात्वा कवचं देवि गोपालं पूजयेद्यदि ॥ १५ ॥

अर्थ—चतुर्भुजी रमानाथ भगवान सदैव उसकी रक्षा करते हैं। किंतु हे देवि !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस कवच को बिना समझे जो मनुष्य गोपालजी की पूजा करते हैं ॥ १५ ॥

सर्वं तस्य वृथा देवि जपहोमार्चनादिकम् ।
सशस्त्रघातं संप्राप्य मृत्युमेति न संशयः ॥ १६ ॥

अर्थ—उनके जप, होम, अर्चन आदि सब व्यर्थ हो जाते हैं और अन्त में किसी शस्त्राघात से उनकी मृत्यु हो जाती है इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है ॥ २५ ॥

※ इति गोपाल कवचम् सम्पूर्णः ※

अथ राधाऽष्टोत्तरशतनामप्रारम्भः

अथास्याः सम्प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ यस्य संकीर्तनादेव श्रीकृष्णं वशयेद्ध्रुवम् ॥ १ ॥ राधिका सुन्दरी गोपी कृष्णसंगमकारिणी ॥ चञ्चलाक्षी कुरङ्गाक्षी गान्धर्वी वृषभानुजा ॥ २ ॥ वीणापाणिः स्मितमुखी १० रक्ताशोकलतालया ॥ गोवर्धनचरी गोपी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपी वेषमनोहरा ॥३॥ चन्द्रावली सपत्नी च दर्पणास्याकलावती ॥
कृपावती सुप्रतीकातरुणी २० हृदयङ्गमी ॥ ४ ॥ कृष्णप्रिया कृष्ण
सखी विपरीतरतिप्रिया ॥ प्रवीणासुरतप्रीता चन्द्रास्या चारुविग्रहा
॥ ५ ॥ केकराक्षाहरेः कान्ता ३० महालक्ष्मी सुकेलिनी ॥ संकेत
वटसं स्थानाकमनीया च कामिनी ॥६॥ वृषभानुसुता राधा किशोरी
ललितालता । विद्युद्वल्ली ४० काञ्चनाभा कुमारी मुग्धवेशिनी॥७॥
केशिनी केशवसखी नवनीतैकविक्रया ॥ षोडशाब्दा कलापूर्णा
जारिणी जारसंगिनी ५० ॥८॥ हर्षिणी वर्षिणी वीरा धीरा धारा
धरा धृतिः ॥ यौवनस्था वनस्था च मधुरा मधुराकृतिः ६० ॥९॥
वृषभानुपुरावासा मानलीलाविशारदा ॥ दानलीला दानदात्री
दण्डहस्ता भ्रुवोन्नता ॥ १० ॥ सुस्तनी मधुरास्या च बिम्बोष्ठीपञ्च-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मस्वरा ७० ॥ संगीतकुशलासे व्याकृष्णवश्यत्वकारिणी ॥ ११ ॥
तारिणी हारिणी ह्रीला शीला लीला ललामिका ॥ गोपाली ८०
दधिविक्रेत्री प्रौढा मुग्धा च मध्यका ॥१२॥ स्वाधीनपतिका चोक्ता
खण्डिता चाभिसारिका ॥ रसिका रासना रस्या ६० रसशास्त्रैकशे-
वधिः ॥ १३ ॥ पालिका लालिकालज्जालालसाललनामणिः ॥
बहुरूपासुरूपाचसुप्रसन्ना महामतिः १०० ॥ १४ ॥ मरालगमना
मत्ता मन्त्रिणी मन्त्रनायिका ॥ मन्त्रराजैक संसेव्या मन्त्रराजैकसि-
द्धिदा ॥ १५ ॥ अष्टादशाक्षरफला अष्टाक्षरनिषेविता १०८ ॥
इत्येतद्राधिकादेव्या नाम्नामष्टोत्तर शतम् ॥ १६ ॥ कीर्तयेत्प्रातरु-
त्थाय कृष्णवश्यत्वसिद्धये ॥ एकैकनामोच्चारेण वशीभवति केशवः
॥ १७ ॥ वदनेचैव कण्ठे च बाह्वोरुरसि चोदरे । पादयोश्च क्रमेणा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्या न्यसेन्मन्त्रान्पृथक् पृथक् ॥ १८ ॥ ॐ तत्सत् इत्यूर्ध्वाम्नाये
राधिकाष्टोत्तरशतनामकथनं नाम प्रथमः पटलः ॥ अथ श्रीराधामहा
मन्त्रः । क्लीं श्रीं राधिकायै स्वाहा ॥ अस्य श्रीराधिकामन्त्रस्य
अगस्त्य ऋषिः ॥ जगती छन्दः ॥ श्रीराधिका परमेश्वरी देवता ॥
क्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः क्लीं श्रीं कीलकं श्रीकृष्णवश्यार्थे जपेविनि-
योगः ॥ अगस्त्यऋषये नमः शिरसि ॥ जगतीछन्दसे नमः मुखे ।
राधिकादेवताय नमः हृदये । क्लीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ क्लीं स्वाहा
शक्तये नमः पादयोः ॥ क्लीं श्रीं कालिकायै नमः सर्वांगेषु ॥ श्रीं
अंगुष्ठाभ्यां नमः क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । राधिकायै स्वाहा मध्यमाभ्यां
नमः क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः राधिकायै
स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । क्लीं हृदयाय नमः ॥ श्रीं शिरसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वाहा ॥ राधिकायै स्वाहा शिखायै वषट् । श्रीं कवचाय हुम् ॥ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ राधिकायै स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ध्यात्वा जपेत् ॥ लक्षमात्रं पुरश्चरणं कलौ चतुर्लक्षं जपित्वा कुशलीभवेत्॥

* इति राधामहामन्त्रः सम्पूर्णः *

* अथ महालक्ष्म्यष्टकम् *

श्रीगणेशायनमः ॥ इन्द्रउवाच ॥ नमस्तेऽस्तुमहामाये श्रीपीठंसुर पूजिते । शंखचक्रगदाहस्तेमहालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ १ ॥ नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ॥ सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मिनमोऽस्तुते ॥ २ ॥ सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ॥ सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥३॥ सिद्धि बुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्त्र मूर्त्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥ आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ते महेश्वरि । योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥ स्थूले सूक्ष्मे महारौद्रे महाशक्ते मनोहरे ॥ महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।६। पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशिजगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥ श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषणे ॥ जगत्स्थिते जगन्मातर्महा लक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥ महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥ ९ ॥ एककालं पठेन्नित्यं महापाप विनाशनम् ॥ द्विकालं च पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥ १० ॥ त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ॥ महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ लक्ष्मीस्तोत्र प्रारम्भः

श्रीगणेशाय नमः ॥ जय पद्मपलाशाक्षि जयत्वं श्रीपतिप्रिये ॥ जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणी ॥१ ॥ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम् सुरेश्वरि । हरिप्रिये नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम् दयानिधे ।२। पद्मालये नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम् च सर्वदे ॥ सर्व भूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदाकुरु ॥३॥ जगन्मातर्नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम् दया निधे ॥ दयावति नमस्तुभ्यम् विश्वेश्वरि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥ नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्यधारिणि ॥ वसुवृष्टे नमस्तुभ्यम् रक्षमां शरणागतम् ॥ ५ ॥ रक्ष त्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे ॥ दारिद्र्यात्त्राहि मां लक्ष्मि कृपाम् कुरु ममोपरि ॥६॥ नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि । ब्रह्मादयो नमन्ति त्वां जगदानन्ददायिनि।७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम् जगद्धिते । आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यम् समृद्धिं कुरु मे सदा ॥८॥ अब्जवासे नमस्तुभ्यम् चपलायैनमोनमः । चञ्चलायै नमस्तुभ्यम् ललितायै नमोनमः ॥ ९ ॥ नमः प्रद्युम्न-जननि मातस्तुभ्यम् नमोनमः ॥ परिपालय मां मातर्देवि त्वं शरणा गतम् ॥ १० ॥ शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये ॥ त्राहि त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे ॥ ११ ॥ पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ते गुणा नरे ॥ शीलित्वं नैव शोभेत महालक्ष्मि त्वया विना ॥ १२ ॥ तावद्विराजते रूपम् तावच्छीलं विराजते ॥ तावद्-गुणा नराणां च यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति ॥ १३ ॥ लक्ष्मि त्वया-ऽलंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्तानृपलोकमान्याः । गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः ॥ १४ ॥ लक्ष्मीर्भूषयते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपम् लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्। लक्ष्मीर्भूषयतेविद्यां सर्वांल्लक्ष्मीर्विशिष्यते
॥ १५ ॥ लक्ष्मि त्वद्गुणकीर्तनेन सकला भूर्यात्यलं जिह्वतां रुद्रा-
द्यारविचन्द्रदेवपतयो वक्तुं च नैव क्षमाः । अस्माभिस्तव रूप लक्ष-
णगुणान्वक्तुंकथम् शक्यतेमातर्मां परिपाहि विश्वजनके कृत्वा ममेष्टम्
ध्रुवम् ॥१६॥ दीनाति भीतं भवतापपीडितं धनैर्विहीनं तव पार्श्व-
मागतम् ॥ कृपा निधित्वान्मम लक्ष्मि सत्वरं धनप्रदान.द्धननायकं
कुरु ॥ १७ ॥ मां विलोक्य जननी हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमा
गतम् ॥ देहि मे झटिति लक्ष्मि कराग्रम् वस्त्रकाञ्चनवरान्नमद्भुतम्
॥ १८ ॥ त्वमेव जननी लक्ष्मि पिता लक्ष्मि त्वमेव च । भ्राता त्वं
च सखा लक्ष्मि विद्या लक्ष्मि त्वमेव च ॥ १९ ॥ त्राहि त्राहि महा
लक्ष्मि त्राहि त्राहि सुरेश्वरि ॥ त्राहि त्राहि जगन्मातर्दारिद्र्यात्त्राहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेगतः ॥ २० ॥ नमस्तुभ्यम् जगद्धात्रि नमस्तुभ्यम् नमोनमः ॥ धर्माधारे नमस्तुभ्यम् नमः संपत्तिदायिनी ॥२१॥ दारिद्र्यार्णवम-ग्नोऽहं विमग्नोऽहं रसातले ॥ मज्जन्तं मां करे धृत्वा तूद्धर त्वं रमे द्रुतम् ॥ २२ ॥ किं लक्ष्मि वहु नोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः । अन्यन्मे शरणम् नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये ॥ २३ ॥ एतच्छ्रुत्वा ऽगास्ति वाक्यम् हृष्यमाणा हरिप्रिया ॥ उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाऽहं तव सर्वदा ॥ २४ ॥ लक्ष्मीरुवाच ॥ यत्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः ॥ शृणोति च महाभागस्तस्याहं वशवर्तिनी ॥२५॥ नित्यं पठति यो भक्त्या त्वलक्ष्मी स्तस्य नश्यति । ऋणं च नश्यते तीव्रं वियोगं नैव पश्यति ॥ २६ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धाभक्ति-समन्वितः ॥ गृहे तस्य सदा तुष्टा नित्यं श्रीः पतिना सह ॥२७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुखसौभाग्यसंपन्नो मनस्वी बुद्धिमान् भवेत् । पुत्रवान् गुणवान् श्रेष्ठो भोगभोक्ता च मानवः ॥ २८ ॥ इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्म्याऽगस्तिप्रकीर्तितम् । विष्णुप्रसादजननं चतुर्वर्गफलप्रदं ।२९। राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः । भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा ॥ ३० ॥ न शस्त्रानलतो यौधाद्भयं तस्य प्रजायते । दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परं । ३१ । मन्दुराकरिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः । पठेत्तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनं ॥ ३२ ॥ सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा । अगस्तिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया ॥ ३३ ॥

—: इत्यगस्ति विरचितं लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi